हज़रत

उस्मान

अहमद नदीम नदवी

हज़रत उस्मान رضي الله عنه

हज़रत

उस्मान رضي الله عنه
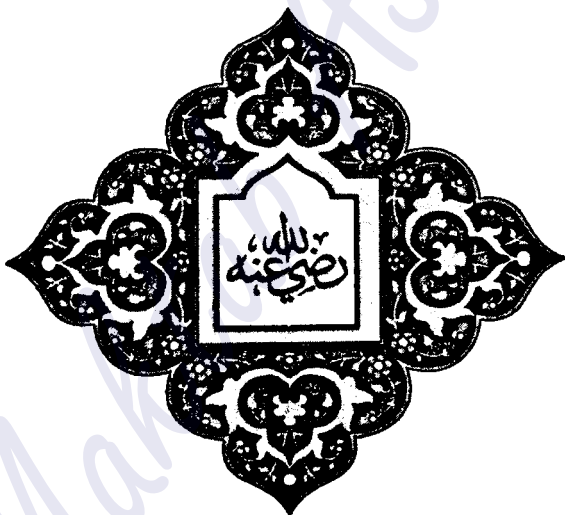
अहमद नदीम नदवी

www.idaraimpex.com

हज़रत उस्मान

लेखक
अहमद नदीम नदवी

Hazrat Usman (Raz)

प्रकाशन : 2014

ISBN: 81-7101-507-7

TP-310-14

Published by Mohammad Yunus for
IDARA IMPEX
D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: +91-11-2695 6832 & 085888 33786
Fax: +91-11-6617 3545 Email: **sales@idara.co**
Online Store: **www.idarastore.com**

Retail Shop: **IDARA IMPEX**
Shop 6, Nizamia Complex, Gali Gadrian, Hazrat Nizamuddin
New Delhi-110013 (India) Tel.: 085888 44786

विषय-सूची

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु

जन्म, बचपन और जवानी

अगर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को अपना उत्तराधिकारी चुनने में ज़्यादा मोहलत मिलती, तो निश्चित रूप से दूसरे कार्यों की तरह इस कार्य को भी सुचारू रुप से पूरा करते। फिर भी वह बड़े साहसी और दूरदर्शी व्यक्ति थे, उनकी निगाहें ताड़ चुकी थीं कि बसरा और कूफ़ा के लोगों का जोड़-तोड़ कोई अच्छा रंग पैदा करने वाला नहीं है, वह यह भी महसूस कर रहे थे कि क़ुरैश वंश का आपसी द्वेष सुखद प्रभाव न डाल पाएगा। वह यह भी समझते थे कि अब्दुर्रहमान के अलावा कोई प्रभावी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो शासन की बागडोर संभालने की ज़िम्मेदारी अपने कंधों पर डाल सके। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उदाहरण उनके सामने था कि प्रत्यक्ष में उन्होंने अपना उत्तराधिकारी किसी को नहीं बनाया, यह अलग बात है, संकेत यही मिल रहे थे कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ही को उनका उत्तराधिकारी होना चाहिए, लेकिन ख़लीफ़ा चुनने की ज़िम्मेदारी तो लोगों पर ही छोड़ दी थी। ऐसे में अगर अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ज़िंदा रहते तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु निश्चित रूप से उन्हें अपना उत्तराधिकरी बना देते। विचार किजिए कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु घायल हैं, तड़प रहे हैं, कमज़ोरी बढ़ती जा रही है, फिर भी उन्हें राष्ट्र-समुदाय का ग़म खाए जा रहा है, सोच रहे हैं, सोचते जा रहे हैं, न वह हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम पर सन्तुष्ट थे, न हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु पर। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उम्र में इन सबसे छोटे थे, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु भी उनकी नज़र में थे। वह दो बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दामाद रह चुके थे, बड़े नरम ह्रदयी थे, यद्यपि उनकी उम्र सत्तर के आस-पास थी, फिर भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की नज़र उन पर पड़ी। बहुत सोच-विचार के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पांच आदमी ऐसे चुने जो मिलकर उनके उत्तराधिकारी का चयन करते। अलबत्ता उनकी इच्छा थी कि हो तो चयन इसी तरह, लेकिन यह सब कुछ उनके मरने के बाद हो और

मरने के बाद तीन दिन के भीतर हो तो बेहतर है।

देहान्त के बाद हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के कमरे में हज़रत अब्दुर्रहमान इन चारों के साथ जमा हुए। विचार-विमर्श हुआ और हज़रत अब्दुर्रहमान ने घोषणा कर दी कि मैं अपना नाम वापस लेता हूं। अब अपना नाम वापस लेनें का सिलसिला शुरू हुआ तो दो और ने नाम वापस ले लिए। फिर हज़रत अब्दुर्रहमान ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुला कर बात की और कहा, क्या आप वायदा करते हैं कि प्यारे नबी की नीतियों और परम्पराओं को यथावत बाक़ी रखेंगे, क़ुरआन और हदीस को बुनियाद बनाएंगे और अल्लाह के रसूल के अब तक के उत्तराधिकारियों के पद-चिह्नों पर चलेंगे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हां क्यों नहीं, ऐसा करने की कोशिश करूंगा।

अब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया गया, वही प्रश्न पूछे गये। उन्होंने बड़े निर्भीक भाव से, साहस दिखाते हुए कहा, 'मैं निश्चित रूप से ऐसा करूंगा।'

हज़रत अब्दुर्रहान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना सर आसमान की तरफ़ उठाया और दुआ की, 'ऐ मेरे मालिक और पालनहार, मेरी दुआ स्वीकार कर ले और वह बोझ जो क़ौम ने ख़लीफ़ा चुनने के लिए मेरे कंधों पर डाला है, मैं वह बोझ उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के कंधों पर डालता हूं।'

हज़रत अब्दुर्रहमान का इतना कहना था कि सबके चेहरे ख़ुशी से खिल उठे और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर बैअत शुरू हो गई। बैअत करने वालों में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। इस तरह आप इस्लाम के तीसरे ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुए।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम के तीसरे खलीफ़ा थे। इस्लाम लाने से पहले आप अबू अम्र के नाम से मशहूर थे। आपके पिता का नाम अफ़्फ़ान था। आप पांचवी पीढ़ी में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वंश से जा मिलते हैं। वह क़बीला बनी उमैया से ताल्लुक़ रखते थे, जो क़बीला क़ुरैश का एक प्रतिष्ठित क़बीला था।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उम्र में छः साल छोटे थे। बचपन ही से आप नरम हृदयी, ईमानदार

और लोकप्रिय थे। बचपन में लिखना-पढ़ना सीखने के बजाए बड़े होकर सीखा था।

बड़े होने के बाद आपने व्यापार का काम शुरू किया। आप बड़े सफल व्यापारी थे। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से आपकी बड़ी गहरी दोस्ती थी, यहां तक कि एक दूसरे से अपने दिल की बात भी कह देने में कोई संकोच न करते थे।

जब प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने रसूल होने का एलान किया, उस समय हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु 34 वर्ष के थे। हज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सन्देश अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ही लेकर हज़रत उस्मान के पास पहुंचे थे।

एक दिन तलहा बिन उबैदुल्लाह और हज़रत उस्मान प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन दोनों को एक अल्लाह के होने, मरने के बाद दोबारा उठाए जाने और अपने रसूल बनाए जाने का उल्लेख किया, तो इन दोनों ने बिना संकोच के इस्लाम अपना लिया। हज़रत उस्मान उन दिनों शाम के सफ़र से वापस आए थे। आपने बातों-बातों में कहा कि मैं वहा से जब वापस आ रहा था, तो रास्ते में दिन ढलते ही मैं एक दिन सो गया। मुझे किसी ने आवाज़ दी, 'उठो, मुहम्मद मक्का में आ पहुंचे हैं।'

फिर आपने इस्लाम स्वीकार कर लिया। उनका मुसलमान क्या होना था कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के चचा हाकिम ने, जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का घोर विरोधी था, उसने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ-पांव रस्सी से बांध दिए, आपको बहुत मारा और कहा, इस्लाम से फिर जाओ।[1] लेकिन आपने साफ़ इंकार कर दिया और कहा कि अगर मेरी जान भी निकल जाए, तो भी इससे फिरने वाला नहीं।

जब अबू लहब ने, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रति घोर द्वेष, घृणा और बुरे-भाव रखने की वजह से, अपने बेटे उत्बा से कहकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी हज़रत रुक़ैया को तलाक़

---

1. तबक़ात इब्ने साद, भाग 3

दिलवा दी, तो यह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ही थे, जिन्होंने हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा से विवाह कर लिया।

विरोधियों और शत्रुओं ने जब मुसलमानों पर दमन-चक्र चलाया और मुसलमानों का जीना दूभर कर दिया, तो हज़रत उस्मान जैसे प्रभावी और साहसी पुरुष को अपनी पत्नी रुक़ैया के साथ मक्का शहर छोड़ना पड़ा, इस तरह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु उन शुरू के लोगों में से हैं, जिन्हें ज़ुल्म व सितम की ज़्यादती सहन न कर पाने के कारण मक्का त्याग करना पड़ा और हिजरत कर ली।[1] फिर आप कई साल तक अबी सीना में ठहरे रहे और जब वापस आए तो दूसरे सहाबियों (साथियों) के साथ मदीना तशरीफ़ ले गए। फिर एक सामान्य मुसलमान की तरह जीवन के दिन बिताने लगे। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़त-काल में आप ख़लीफ़ा के मुशीर (जिनसे मंत्रणा की जाए) भी रहे, महत्त्वपूर्ण मामलों में आपसे मश्विरे भी लिए जाते। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के शहीद कर दिए जाने के बाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पर सबकी निगाहें जमी हुई थीं, अन्ततः वह ख़लीफ़ा चुनने वाली कमेटी के ज़रिए ख़लीफ़ा मनोनीत कर दिए गए।

---

1. अपने शहर को परेशान होकर छोड़ देना और दूसरे शहर में जाकर आबाद होना ही 'हिजरत' है, जो अब पवित्र पारिभाषिक शब्द बन चुका है।

ख़लीफ़ा बनने के बाद

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़लीफ़ा चुने जाने के बाद शासन की बागडोर संभाल ली। ख़लीफ़ा की हैसियत से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने समय के प्रशासन को चुस्त और चौकस बनाने की भरपूर कोशिश की। उस समय तक मुसलमानों ने जो विजय प्राप्त की थी और इसके कारण संसार के एक बड़े भू-भाग में उनका डंका बजने लगा था, इसमें किसी तरह की कोई कमी महसूस न होने पाए, इसके लिए प्रशासन को चुस्त और चौकस बनाना अत्यन्त आवश्यक था। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने यही किया और अधिकतर प्रशासनिक कर्मचारियों की तंख़्वाहें बढ़ा दीं। इस तरह प्रशासनिक कर्मचारी प्रसन्न हो गए और वे अपने कामों में पूरी तरह जुट गए।

इसी तरह अभी ख़लीफ़ा बने हुए छः महीने ही हुए थे कि फ़ारस में मुसलमानों के ख़िलाफ़ एक गहरे षड़यंत्र का पता चल गया। ईरानियों ने समझौतों को नज़र अंदाज़ करते हुए एक प्रकार के विद्रोह का एलान कर दिया। उनकी कोशिश थी कि किसी तरह एक सिरे से दूसरे सिरे तक इस्लामी राज्य को उलट दिया जाए। ईरानी सम्राट यज़्द गुर्द यद्यपि अभी जीवित था और उसे देश-निकाला दे दिया गया था, कहा जाता है कि इस विद्रोह में उसका भी हाथ था। उसके कर्मचारियों ने देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक ऐसी हलचल मचा रखी थी, जो क्रान्ति का रूप धारण कर सकती थी।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए यह मामला किसी चुनौती से कम न था, लेकिन उन्होंने धैर्यपूर्वक इसे समझने का यत्न किया, घटनाओं पर विचार किया और इस नतीजे पर पहुंचे कि इब्ने अम्र को, जो बसरा के गर्वनर थे, इस षड़यत्र को विफल करने पर लगाया जाए।

उन्होंने इस मामले में बड़ी तेजी दिखाई और देखते-देखते वह फ़ारस-सीमा पर पहुंच गए और उठने वाले विद्रोह को तुरन्त कुचल दिया, आग वहीं दबा दी गई। आगे बढ़कर उन्होंने यह भी किया कि फ़ारस के उत्तर और पूरब की ओर आगे बढ़कर शत्रु के मज़बूत क़िलों को घेर लिया, यहां तक कि शत्रुओं ने हथियार डाल दिए। फिर प्रतिष्ठित और योग्य सरदारों को प्रशासक बनाकर उनसे जिज़या का समझौता कर लिया। मर्व के सरदारों ने तो दस-दस लाख अशर्फ़ियां

वार्षिक जिज़या के रूप में देना मंजूर कर लिया।

ख़्वारज़्म वालों ने समझौते के बजाए लड़ना प्रसन्द किया, लेकिन रक्षा-क्षेत्र में ठहर न सके और पराजय का मुंह देखना पड़ा। षड़यंत्र के इस चक्र को समाप्त करने के लिए मुसलमानों की सेनाएं बल्ख़ और तुर्किस्तान तक जा पहुंचीं। इस तरह षड़यंत्र समाप्त हुआ। चालीस हज़ार क़ैदी मुसलमानों के हाथ लगे। अब हेरात, काबुल और ग़ज़नी मुसलमानों के क़ब्ज़े में थे और पूरे क्षेत्र में शान्ति का वातावरण पैदा हो गया था।

इस बीच तुर्कों का वैर-भाव भी खुल कर सामने आ गया था। तुर्कों और क़ौम हज़र के लोगों ने लगातार मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश की, जिससे शान्ति को भी ख़तरा पैदा हो गया। लेकिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु थे दृढ़ संकल्पी और कुशल प्रशासक, उन्होंने तुर्कों और क़ौम हज़र का सर कुचलने के लिए सन 32 हि0 में एक सेना उनके मुक़ाबले के लिए भेजी। तुर्क आज़र बाईजान के पहाड़ों से अच्छी तरह परीचित थे, इसलिए उन्होंने इन पहाड़ों की शरण लेकर मुसलमानों का इस तरह मुक़ाबला किया कि सेना की एक टुकड़ी और कई अच्छे जर्नल काम आ गए। यह बड़ी खेदजनक बात थी।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने तुरन्त आदेश दिया कि शाम से और अधिक सेनाएं सहायता के लिए भेजी जाएं। यह संयोग की बात है कि शाम की सेनाओं ने कूफ़ा की सेनाओं के जनरलों के मातहत लड़ने से इंकार कर दिया और आपस ही में भिड़ गए। बड़ी मुश्किल से इस पर क़ाबू पाया गया।

एक और विपत्ति यह आई कि किरमान की पहाड़ियों पर इस्लामी सेनाएं इतनी गहरी बर्फ़ में जा फंसीं कि सेना का बड़ा भाग सर्दी का शिकार हो गया, इन परेशानियों के बाद भी अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने स्थित पर अपनी पकड़ मज़बूत बनाये रखी और वह एक-एक करके सब पर क़ाबू पाते चले गए।

ठीक इन्हीं दिनों रूम के बादशाह (क़ैसर) ने अपनी शत्रुता इस इच्छा के अन्तर्गत दिखाई कि किसी तरह वह शाम को मुसलमानों के क़ब्ज़े से छीन ले। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ही के ख़िलाफ़त काल में दूसरे साल रूमी फ़ौजें एशिया-ए-कोचक से शाम में आ दाख़िल हुईं। अमीर मुआविया की जो सेनाएं

शाम में उनके पास थीं, मुक़ाबले के लिए काफ़ी न थीं। अमीरुल मोमिनीन ने और अधिक सेनाएं कुमक के रूप में शाम को रवाना कर दीं। इस लड़ाई में क़ैसर को भारी नुक़्सान उठाना पड़ा। मुसलमानों ने प्रतिरक्षा ही को पर्याप्त न समझा बल्कि रूमी सेनाओं को धकेलते हुए ऐशिया-ए-कोचक तक जा पहुंचे और आरमीनिया से काले सागर तक पूरे क्षेत्र पर क़ब्ज़ा बना कर जगह-जगह क़िलों का जाल बिछा दिया।

इसे संयोग ही कहा जाएगा कि हर वर्ष क़ुस्तुन्तुनया से रूमी सेनाएं मुसलमानों पर हमला करने के लिए निकलतीं, और अनका दुर्भाग्य कि उन्हें हार का मुंह देखना पड़ता।

साइप्रस का मसला

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जब ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन (मुसलमानों के ख़लीफ़ा) थे, उस समय अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु शाम के गवर्नर थे। वह बार-बार यही प्रस्ताव भेजा करते थे कि साइप्रस पर आक्रमण की अनुमति दी जाए, मगर अमीरुल मोमिनीन नहीं चाहते थे कि समुद्री लड़ाइयां लड़ी जाएं, इसलिए उन्होंने इजाज़त न दी, जबकि साइप्रस द्वीप शाम की सीमा के निकट था।

चूंकि क़ैसर हर साल शाम पर चढ़ाई करता था, इसलिए अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार फिर ख़िलाफ़त दरबार से अनुमति चाही कि उसे साइप्रस पर आक्रमण करनें की अनुमति दी जाए। आक्रमण हुआ और एक ही आक्रमण में साइप्रस पर विजय प्राप्त कर ली गई। वहां के लोगों ने वही टैक्स देना तै किया, जो वे रूम को दिया करते थे।

कुछ दिनों में एक बार फिर रूमियों की दुष्टता के शिकार होकर साइप्रस के लोगों ने टैक्स देना बन्द कर दियां और विद्रोह का रूप अपना लिया। मुसलमानों ने विद्रोह को ही नहीं कुचला, बल्कि दोबारा विजय प्राप्त करके उसे इस्लामी राज्य का एक अंश बना लिया।

उस समय हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के देहान्त के बाद पूरे इस्लामी राज्य में ऐसा लग रहा था मानो विद्रोह की लहर खड़ी हो गई हो। फ़ारस में विद्रोह हुआ, मिस्र ने भी ज़ोर लगाया। चुनांचे इस उद्देश्य के लिए रूमी फ़ौजें स्कन्दरिया पर उतर आईं, जो सीमा से मिला हुआ था। उन्होंने नहर पर क़ब्ज़ा भी कर लिया, लेकिन हज़रत अम्र बिन आस ने जो तेज़ी और मुस्तैदी दिखाई, उससे रूमी सेनाओं को पसपा होना पड़ा।

फिर रूमी साम्राज्य का एक नया षड़यंत्र सामने आया। इस्लामी राज्य को क्षति पहुंचाने और उसको राजनीतिक स्तर पर पराजित करने की उसकी जो चाहत थी, इस अवसर पर एक बार और सामने आयी। जो नहर मिस्र और एशिया को मिलाती थी, उस पर उन्होंने क़ब्ज़ा कर लिया। अपनी भारी सेना उतार दी। हज़रत अम्र बिन आस उस वक़्त वहां के गवर्नर थे। उन्होंने भरपूर लगन और परिश्रम के साथ नहर पर दोबारा क़ब्ज़ा कर लिया और रूमियों को

परास्त होना पड़ा।

एक घटना यह घटी कि समय के गवर्नर हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि०) और अब्दुल्लाह बिन साद के दर्मियान में किसी समस्या में मतभेद हो गया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु भी उस समय के एक महान व्यक्ति थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन साद हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के दूध-शरीक भाई भी थे, मुक़दमा अमीरुल मोमिनीन के पास पहुँचा। फ़ैसला हज़रत अब्दुल्लाह बिन साद के हक़ में गया, लेकिन बात किसी कड़ुवाहट में न बदले, उन्होंने हज़रत अम्र बिन आस को वापस केन्द्र में बुला लिया और अब्दुल्लाह बिन साद की नियुक्ति गवर्नर के रूप में हो गई।

उसी समय एक और घटना घटित हुई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के शासन-काल में पश्चिमी तराबलस तक मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो चुका था, फिर भी उस क्षेत्र में रूमी सेनाएं अब भी मौजूद थीं। इसका अर्थ यह निकला कि मुसलमानों का पूर्ण रूप से क़ब्ज़ा अभी तक न हो सका था। पूर्ण क़ब्ज़े के लिए इसके अलावा कोई रास्ता न था कि रूमी सेनाओं को वहां से मार भगाया जाए। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने नए गवर्नर को आदेश दिया कि वहां पहुंच कर स्थिति का जायज़ा लें और यत्न करें कि रूमी सेनाएं परास्त होकर भाग जाएं। अमीरुल मोमिनीन का यह विचार सही था कि जब तक रूमी सेनाएं उत्तरी अफ़्रीक़ा में मौजूद रहेंगी, मुसलमान मिस्र में शान्तिपूर्वक नहीं बैठ सकते। वहां उस समय रूमियोंके पास एक लाख चौबीस हज़ार सेनाएं मौजूद थीं, और मुसलमान मुक़ाबले के लिए बहुत थोड़े और अपर्याप्त (नाकाफ़ी) थे। विवश होकर मुसलमानों की सहायता के लिए एक बड़ी सेना वहां भेजी गई और अब्दुल्लाह बिन साद जैसे अनुभवी सेना-अधिकारियों को उनके पास भेजा गया, उनमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुम भी थे। एक अत्यंत भयानक और लंबी लड़ाई हुई। अन्ततः मुसलमानों ने बड़ी बे-जिगरी से हिस्सा लिया, यहां तक कि रूमी सरदार करागरी अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के हाथों क़त्ल कर दिया गया। रूमी सेनाओं के दिल बैठ गए। सेनापति की हत्या के बाद वे इतना डरीं कि रण-क्षेत्र छोड़ कर भाग निकलीं। यह लड़ाई सन 26 हिजरी में हुई।

इसके ठीक पांच साल बाद रूमियों ने सन् 31 हि0 में फिर एक बार कोशिश की कि मुसलमानों को मिस्र से निकाल दें। इस बार उन्होंने एक बहुत बड़ा समुद्री

बेड़ा तैयार किया जिसकी संख्या पांच सौ के आस-पास रही होगी। मुसलमानों को मुक़ाबला करना ही था, उन्होंने भी एक बेड़ा तैयार किया, लेकिन इतना संक्षिप्त था कि रूमियों के मुक़ाबले में उसकी कोई हैसियत ही न थी। लड़ाई हुई और रूमियों को भारी तायदाद होने के बावजूद परास्त होना पड़ा और मिस्र से उन्हें सदा-सर्वदा के लिए निकल भागना पड़ा।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़त-काल में आरंभिक छः वर्षों में राज्य में तेज़ी से विस्तार हुआ। कई नए क्षेत्रों पर भी क़ब्ज़ा हुआ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का रौब व दबदबा भी पूरी तरह स्थापित था। अगर कहीं किसी क्षेत्र में विद्रोह की लहर उठी तो वह तत्काल दबा दी गई। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने ख़िलाफ़त काल में समुद्री बेड़ा बनाने पर भी ध्यान दिया।

ऐसा नहीं था कि सिर्फ़ लड़ाई ही हो रही हो, बल्कि राज्य में शान्ति थी, समृद्धि थी, हर एक सन्तुष्ट था कि आवश्यक आवश्यकताओं को पूरा करने में अब उसे कोई पेरशानी नहीं हो रही है। प्रजा की जो बुनियादी ज़रूरतें होती हैं, वे सब पूरी हो रही थीं। राजनीतिक स्वातंत्रता, खाने-पीने की फ़रावानी और मौलिक आवश्कताओं की पूर्ति, यहां तक कि नवजात की ज़रूरतों का पूरा होना, किसी भी देश और राष्ट्र के लिए बड़े सन्तोष की बात है।

फिर इस्लामी सिद्धांतों पर जीवन बिताने की वजह से जो भाईचारा, जो मेल-मिलाप, जो एक दूसरे की सेवा करने और एक दूसरे के काम आने की भावना, अधिकारों-कर्त्तव्यों का विशेष ध्यान पाया जा रहा था, इन तमाम बातों को अगर जोड़कर देखा जाए, तो कहा जा सकता है कि उस समय आदर्श लोग, आदर्श समाज और आदर्श राष्ट्र की परिकल्पना पूरे यौवन पर थी।

इन चीज़ों को देखते हुए विचार आम हो चला था कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़ात-काल से कम न कार्य किया है, न देश की तरक़्क़ी और उन्नति में कोई कमी आई है। यह साधारण बात न थी, इसे तो स्वीकार ही करना पड़ेगा।

फिर एक दौर ऐसा भी आया कि लोगों को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के शासन में कमियां दिखाई पड़ने लगीं और यह बढ़ते-बढ़ते इतनी बढ़ीं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त कमज़ोर पड़ती चली गई।

शिकायतें शुरू हो गईं

आरंभिक छः साल तो निश्चित रूप से स्वर्णिम कहे जा सकते हैं, लेकिन उसके बाद समस्याओं और उलझनों का जो सिलसिला चला तो चलता ही रहा। शिकायतें इतनी बढ़ीं कि लोग समझने लगे कि हज़रत उस्मान को ख़िलाफ़त-पद से हटा दिया जाना ही बेहतर है।

एक शिकायत लोगों को यह हो गई कि हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु अपने रिश्तेदारों-नातेदारों को राज्य के महत्त्वपूर्ण पदों का अधिकार सौंपते जा रहे हैं, क्या यह उचित है? पदों का दे देना बहुत अधिक महत्त्व नहीं रखता, लेकिन वे उन पदों के अधिकारी बनने योग्य हैं, इसकी तनिक भी परवाह नहीं की गई, ऐसा लोगों का कहना था।

एक शिकायत यह थी कि अमीरुल मोमिनीन गवर्नरों के ख़िलाफ़ शिकायत सुनने से इंकार कर देते हैं, इसलिए कि वे अधिकांश उनके अपने नातेदार-रिश्तेदार हैं।

यह सही है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने बसरा, कूफ़ा और मिस्र जैसे प्रदेशों का ज़िम्मेदार ऐसे ही लोगों को बनाया था, जो दूर व नज़दीक उनके रिश्तेदार थे, लेकिन इसके अलावा जो ज़िम्मेदार भी बनाए गए थे, वे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बनाए हुए थे। जैसे शाम के गवर्नर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के बहुत क़रीबी रिश्तेदार थे, पर उनकी नियुक्ति तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने की थी। इसी तरह फ़ारस पर साद ने विजय प्राप्त की थी और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें भी वहीं का गवर्नर बना दिया था, मगर जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास उनकी शिकायतें पहुंचीं, तो उहोंने उन्हें वापस बुला लिया, उनके स्थान पर हज़रत मुग़ीरह रज़ियल्लाहु अन्हु अधिकारी बना दिए गए। ऐसा समझा जाना असंभव नहीं है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जांच-पड़ताल की हो, और वह इस परिणाम पर पहुंचे हों कि साद के ख़िलाफ़ शिकायतें न सही हैं, न उचित, इसलिए उनकी इच्छा हुई हो कि उन्हें फिर गवर्नर बना दिया जाए लेकिन वह अभी ऐसा सोच ही रहे थे कि देहान्त हो गया।

अब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बने, तो उन्होंने इसको

अमली जामा पहनाया और मुग़ीरह रज़ियल्लाहु अन्हु की जगह साद को भेज दिया।

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु गवर्नर बन गए, लेकिन एक और नया झगड़ा खड़ा हो गया। उस वक़्त ख़ज़ाने के ज़िम्मेदार हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु थे। जब साद वहां पहुंचे तो इसने एक नया रूप ले लिया, हुआ यह था कि गवर्नर ने ख़ज़ाने से एक बड़ी रक़म ऋण के रूप में ली। जब समय हो गया तो ख़ज़ाने के अधिकारी ने उसकी अदाएगी की मांग की। इस मांग ने झागड़े का रूप ले लिया। इन दो बुज़ुर्गो के झगड़े ने पार्टी बन्दी का माहौल बना दिया। कुछ इधर हो गए, कुछ उधर हो गए, अमीरुल मोमिनीन को मजबूर होकर इसकी जांच करनी पड़ी।

सारांश यह कि साद को फिर गवर्नरी से वापस बुला लिया गया। उनके स्थान पर वलीद बिन उक़बा गवर्नर बनाये गए। यह संयोग ही था कि वलीद बिन उक़बा अमीरुल मोमिनीन की मां के बहुत क़रीबी रिश्तेदार थे। इस घटना को संयोग ही कहना चाहिए न इस में किसी पक्षपात का दख़ल था, न किसी रिश्तेदारी का। इसकी गवाही में यह घटना प्रस्तुत की जा सकती है कि जब वलीद बिन उक़बा पर शराब पीने का आरोप लगा, तो जांच रिपोर्ट आ जाने पर न केवल यह कि कोई उदारता नहीं दिखाई गई, बल्कि खुली सभा में उन्हें अस्सी कोड़े की सज़ा भी दी गई।

सन् 30 हि0 में वलीद के बजाए साद बिन आस की नियुक्ति हुई। फिर अबू मूसा अशअ़री नियुक्त किए गए और यह ख़लीफ़ा के रिश्तेदारों में से तो थे ही नहीं।

अबू मूसा अशअ़री की नियुक्ति हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने की थी। 29 हि0 में बसरा के लोगों ने उन पर यह आरोप लगाया था कि वह क़ुरैश की नाजायज़ हिमायत और तरफ़दारी करते हैं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने जांच-पड़ताल के बाद उनको हटा दिया और लोगों की अच्छानुसार एक व्यक्ति की नियुक्ति की, फिर कुछ दिनों बाद उसे भी हटा दिया और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की नियुक्ति कर दी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उस्मान के क़रीबी रिश्तेदार ज़रूर थे, पर थे भी बड़े बुद्धिमान, समझदार और मामलों की समझ रखने वाले। उन्होंने फ़ारस पर दोबारा विजय पाने में बड़ी वीरता और साहस का

सबूत दिया और और वह नया क्षेत्र जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के युग में इस्लामी राज्य में शामिल हुआ था, इन्हीं के साहस और शक्ति का परिचायक था। यह थे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, लेकिन कमज़ोर दिल होने के कारण जब विद्राहियो ने मदीना पहुंच कर अब्दुल्लाह बिन उमर को हटाये जाने की मांग की, तो आपने उन्हें तत्काल हटा दिया और उनकी जगह पर मुहम्मद बिन अबूबक्र की नियुक्ति कर दी।

खिलाफ़त-काल को अभी आठ वर्ष ही हो रहे थे कि एक ऐसा व्यक्ति बसरा में आया जो नस्ल की दृष्टि से यहूदी था और यमन का रहने वाला था। उसकी मां हबश की थी। उन दिनों बसरा के गर्वनर अब्दुल्लाह बिन उमर थे। इब्ने सबा यहां आते ही मुसलमान हो गया। कहा जाता है कि उसने इस्लाम की चादर चेहरे पर डाल रखी थी, वरना वह था कपटाचारी (मुनाफ़िक़), दिल में कुछ और ज़ुबान पर कुछ। इस्लाम तो उसने यों ही अपना लिया था। सही अर्थों में वह बड़ा दुष्ट था।

पहले तो उसने गवर्नर के खिलाफ़ प्रचार करने पर ध्यान दिया, ताकि वह गवर्नर के खिलाफ़ देश में एक हड़बोंग मचाए, लोग भड़कें और फिर निशाने पर ख़लीफ़ा आ जाएं कि वह ऐसे लोगों को क्यों गवर्नर बनाते हैं, बसरा के गवर्नर को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने उसे निकाल बाहर किया और वह कूफ़ा, शाम और मिस्र में इधर-उधर फिरता रहा। उसकी ये हरकतें आमतौर से नापसन्द की गईं, जहां भी वह गया, वहां से वह निकाला गया, फिर भी वह इस पहलू से सफल रहा कि लोगों के दिलों में गवर्नर के खिलाफ़ नफ़रत के बीज डाल दे। केवल शाम ही एक ऐसा प्रान्त था जहां उस का दुष्प्रचार रंग न ला सका, गवर्नर अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु, बड़ी तेज़ी से, बुद्धिमत्ता दिखाते हुए उस के षड़यंत्र को विफल करते रहे।

इब्ने सबा की मां हब्शी जाति की थी, इसी ताल्लुक़ से लोग इब्ने सबा को इब्ने सौदा भी कहा करते थे। इब्ने सबा ने शाम प्रांत में बहुत दिनों तक निवास किया। इब्ने सबा ने वहां बड़े सीधे-सादे सज्जन सहाबी अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु से अच्छे संबंध बना लिए। उनका विचार था कि मुसलमानों को माल-दौलत के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए, वह इस पर बहुत ज़ोर देते थे और पूरे निष्ठा-भाव से इसका प्रचार करते थे। वह कहा करते थे कि मुसलमान के पास जो आवश्यकता से अधिक माल है, उसे ज़रूरत मंदों में बांट देना चाहिए और

ग़रीबों को दे देना चाहिए।

इब्ने साद ने अपनी दुष्टता का आरंभ यहीं से किया। एक दिन उनसे मिलकर कहने लगा, देखो गवर्नर शाम अमीर मुआविया बैतुलमाल को अल्लाह का माल कहता है, जब हर चीज़ अल्लाह की है तो सिर्फ़ माल ही को अल्लाह का माल कहने का अर्थ क्या है। इसका उद्देश्य केवल यह है कि बैतुल माल को हज़म कर लिया जाए, इस तरह गवर्नर ख़ुद बैतुलमाल को हज़म कर जाए।

अबूज़र के दिमाग़ में यह बात पहले ही बैठी हुई थी कि यह सही नहीं हो रहा है, इसलिए वह उसकी चाल में आ गए।

जब हज़रत मुआविया को इसका ज्ञान हुआ कि इब्ने सौदा की चालों में आ कर अबूज़र मुसलमानों में आपसी घृणा के बीज बो रहे हैं, तो उन्होंने अबूज़र को समझाया कि आप ऐसी बातें छोड़ दें कि इससे बिगाड़ पैदा होगा और देश में अशान्ति फैल जाएगी।

अबूज़र ने वही अपना प्रश्न दोहराया तो उन्होंने बड़े अच्छे ढंग से उन्हें समझाया, लेकिन अबूज़र को तसल्ली न हुई। इब्ने सौदा बराबर अपने काम में लगा रहा। उसने दूसरे सहाबियों को भी उकसाने का यत्न किया, पर वे अबूज़र की तरह सादा तबियत न थे, हर मामले को ख़ूब समझते थे, तुरन्त समझ गए कि क्या कुछ होने जा रहा है, वे यह भी समझ गए कि इब्ने सौदा बिगाड़ ही नहीं पैदा कर रहा है, बल्कि मुसलमानों में मतभेद पैदा करके उनको एक दूसरे से लड़ा देना चाहता है। ऐसी स्थिति में उबादा बिन उसामा अमीर मुआविया के पास पहुंचे, पूरी बात बताई, दुष्टताओं का विस्तृत विवेचन किया और गवर्नर को राय दी कि वह उनको शाम से निकाल दें। गवर्नर ने बात मान ली और उसको शाम (सीरिया) से देश निकाला दे दिया।

इब्ने सौदा शाम से चला गया, फिर भी हज़रत अबूज़र अपने काम में लगे रहे और पूरे जोश के साथ प्रचार करते रहे। उनको समझाया गया कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ साथी बड़े मालदार थे और उनकी मालदारी इस्लाम के प्रचार में बहुत काम आई। अगर वे माल को जमा न करते तो युद्ध सामग्री कैसे आती और मुक़ाबला कैसे होता। अगर नीयत सही है, तो धन जमा करना कोई बुरी बात नहीं है। आख़िर तबूक की लड़ाई में दस हज़ार सैनिकों के लिए हज़रत उस्मान ही ने तमाम सामग्री उपलब्ध कराई थी, अगर ऐसा न होता तो मुसलमानों को

क्या कुछ झेलना पड़ता, इसका अनुमान करना कठिन नहीं है। क़ुरआन भी माल जमा करने से मना नहीं करता।

मगर अबूज़र अपने विचारों पर जमे हुए थे। नतीजा यह निकला कि ग़रीबों ने अमीरों पर हाथ उठाना शुरू कर दिया। ये तमाम बातें अमीर मुआविया ने हज़रत उस्मान के पास सविस्तार लिख कर भेज दीं। उत्तर में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा कि अबूज़र को मान-सम्मान के साथ मदीना रवाना कर दिया जाए। हज़रत उस्मान ने स्वयं अबूज़र से बात-चीत की, स्थिति जाननी चाहिए, शिकायतों को ध्यान पूर्वक सुना। अबूज़र ने वही पुराना क़िस्सा दोहराया कि 'बैतुल माल' को 'अमवालुल्लाह' (अल्लाह का माल) न कहा जाए और मुसलमान किसी स्थिति में भी माल जमा न करें।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने नम्रतापूर्वक उन्हें समझाया कि यह काम अमीरुल मोमिनीन का है और जो दायित्व अल्लाह ने मुझे सौंपा है, मैं उसे निभाने के लिए हर संभव यत्न करूंगा, पर मैं आपसे एक मित्र के नाते कहता हूं कि आप मुसलमानों में द्वेष-भाव न पैदा करें।

अबूज़र को इस पर भी संतोष नहीं हुआ तो अमीरुल मोमिनीन के लिए और कोई रास्ता न था कि अबूज़र को किसी ऐसी जगह रखते, जहां स्थिति के बिगड़ने की संभावना कम से कम होती। तमाम पहलुओं पर विचार करने के बाद तै पाया कि अबूज़र को रेज़ा में रखा जाए, ताकि उनके लिए वहां के लोगों में भेद-भाव और द्वेषभाव पैदा करने की संभावना कम से कम हो जाए। यद्यपि अबूज़र ने पूरी उम्र कोई ऐसा काम न किया था जो क़ानून और शरीअत के विरुद्ध हो, पर उन लोगों ने, जो इन परिस्थितियों का अनुचित लाभ उठाना चाहते थे इसका प्रचार ख़ूब किया और जगह-जगह किया कि एक माननीय सहाबी को देश निकाला दे दिया गया है। इस देश-निकाला के दो साल बाद अबूज़र का देहावसान हो गया (रज़ियल्लाहु अन्हु)

इब्ने सौदा जब मिस्र पहुंचा तो उसने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के विरुद्ध खुल कर प्रचार करना शुरू कर दिया और इसे दोहराता रहा कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबूज़र के हक़ का हरण किया है, वह ख़लीफ़ा बनने के अधिक अधिकारी थे। उसने अपने एजेन्ट नियुक्त कर दिये जो बसरा और कूफ़ा में इन विषैले विचारों का प्रचार करते। इस तरह वह हज़रत उस्मान के विरुद्ध एक समूह तैयार करने में सफल हो गया और इब्ने सौदा और

उसके समर्थकों ने इसका भरपूर प्रचार किया कि ख़िलाफ़त (राज सिंहासन) के मूल अधिकारी तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु थे, न कि हज़रत उस्मान।

स्थिति यह हुई कि हर तरीक़े से लोगों को भड़काया गया, सामान्य सी बातों को ख़ूब रंग देकर असामान्य बना दिया गया, जैसे क़ुरैश ही को पदाधिकारी बनाया जाता है, पर जब लड़ाई के मैदान में जान देने की ज़रूरत पड़ती है तो ग़ैर-क़ुरैश को झोंक दिया जाता है, आदि-आदि झूठे और गन्दे प्रचारों से जन-साधारण को पूरी तरह विद्रोह करने पर उतर आने को कहा गया।

झूठे प्रचारों में एक प्रचार यह भी था कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथियों ने क़ुरआन को जला दिया है, जबकि इस प्रकार की कोई वास्तविकता थी ही नहीं। हुआ यह था कि प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के समय से ही लोग गिरोह-के गिरोह इस्लाम में प्रवेश कर रहे थे, हज़रत उस्मान के युग में इसमें और बढ़ोतरी हो गई। समस्या क़ुरआन और उसके पढ़ने की थी। क़ुरआन अरबी भाषा में उतरा है, सही यही है कि उसे पढ़ा इस तरह जाए जैसा कि पढ़ा जाना चाहिए, लेकिन हुआ यह कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के युग तक आते-आते इसका ध्यान कम से कम रखा गया और लोग मनमाने ढंग से उसे पढ़ने लगे और उसी के अनुसार लिखने भी लगे, यह शुभ चिह्न न था। चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने साथियों के मश्विरे से क़ुरआन की उस प्रति के अनुसार क़ुरआन की बहुत सारी प्रतियां तैयार कराईं, जो उस समय हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास थी और जिसे हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के युग में सही प्रति के रूप में सुरक्षित करा दिया गया था और जो सही अर्थों में मूल प्रति थी। यह काम हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने साथियों के मश्विरे से किया था, और सही बात तो यह थी कि यह इस्लाम की अत्यन्त महान सेवा थी, मगर फ़सादियों और दुष्टों ने इस पर भी ख़ूब ले-दे की और उन लोगों को, जो राजधानी से बहुत दूर थे, और सही बातें जिनको मालूम न थीं, ख़ूब भड़काया यह कह कर कि अमीरुल मोमिनीन और उनके साथियों ने क़ुरआन को जला दिया है।

इब्ने सौदा ने बड़ी चालाकी से उन लोगों को जो सरकार के विरुद्ध थे, अपने साथ मिलाना शुरू किया। इब्ने सौदा बड़ा अच्छा वक्ता था, हर एक की रुचि और इच्छा को देखकर वह ऐसे वक्तव्य देता कि लोग उसके पक्ष में हो जाते। बसरा, कूफ़ा और मिस्र उसके इन विचारों का केन्द्र बन गए थे, अलबत्ता मदीना

और शाम इस षड़यंत्र से बचे हुए थे।

कूफ़ा में इन दुष्टों की एक टोली ने एक व्यक्ति अली बिन हमान के घर पर डाका डाला और उसकी हत्या कर दी। ख़लीफ़ा ने जांच कराई और डाकुओं को क़त्ल करा कर नगरद्वार पर लटका दिया, ताकि दूसरे उससे शिक्षा ग्रहण करें। उन डाकुओं के मां-बाप को बहुत दुख हुआ और खुफ़िया तौर पर उन्होंने एक ऐसा ग्रुप बना लिया जो सरकार के विरुद्ध प्रचार करे और गवर्नर वलीद बिन उक़बा से जैसे भी हो, बदला ले। गवर्नर से बदला लेने के लिए उन्होंने जासूस लगा दिए और ग़लत प्रचार किया कि वलीद बिन उक़बा छुप कर शराब पीता है।

इस प्रचार का नतीजा यह निकला कि एक बहुत बड़े गिरोह ने विद्रोहियों के साथ मिलकर गवर्नर के मकान को घेर लिया। मकान का दरवाज़ा मस्जिद में खुलता था। जब गवर्नर को यह बात मालूम हुई कि लोगों ने मकान घेर लिया है, तो वह बहुत घबराए। उस वक़्त वह खाना खा रहे थे जो बहुत सादा और मामूली था, उन्होंने चारपाई के नीचे सरका दिया। विद्रोहियों ने उन्हें ऐसा करते देखा तो समझे कि शराब छिपा रहे हैं, तुरन्त कमरे में दाख़िल होकर खाना चारपाई के नीचे से बाहर निकाला, मगर यह देख कर कि वह खाना है, शराब नहीं है, सब लज्जित हुए, फिर बिखर कर वापस चले गए। वलीद बिन उक़बा ने इस बात को मामूली समझते हुए अमीरुल मोमीनीन के पास रिपोर्ट न भेजी और यही न भेजना विनाश का कारण बन गया।

लोग वापस लौट गए और एक दूसरे की निंदा करने लगे, लेकिन विद्रोहियों ने किसी की न सुनी और गवर्नर के विनाश का संकल्प ले लिया।

फिर ये विद्रोही एक प्रतिनिधि मंडली बना कर ख़लीफ़ा की सेवा में उपस्थित हुए और मांग की कि वलीद बिन उक़बा को पद से हटाया जाए, मगर उन्होंने किसी उचित कारण और तर्क के बिना उन्हें हटाने से साफ़ मना कर दिया।

जब इन विद्रोहियों की बिल्कुल न चली, तो उन्होंने अबू ज़ैनब और अबू दरअ, दो व्यक्तियों को इस बात के लिए नियुक्त किया कि वे गवर्नर को अपमानित करने का कोई उपाय सोचें। इन दोनों ने गवर्नर के यहां आना जाना शुरू कर दिया और उसके हितैषी बन गए। गवर्नर ने भी उन पर भरोसा किया। एक दिन दोपहर के खाने के बाद वलीद बिन उक़बा आराम कर रहे थे कि इन दोनों ने उनकी अगूंठी उनके हाथ से उतार ली और मदीना जाकर ख़लीफ़ा के पास यह मुक़द्दमा पेश कर दिया कि गवर्नर ने शराब के नशे में धत्त होकर अंगूठी

अपने हाथ से उतार कर फेंक दी थी और वह अंगूठी हम ख़लीफ़ा के दरबार में पेश करते हैं।

अमीरुल मोमिनीन ने मालूम किया, क्या गवर्नर ने तुम्हारे सामने शराब पी थी? उन्होंने साफ़ हां तो नहीं कहा, क्योंकि उससे यह बात बन नहीं रही थी और स्वयं उनके साथ पीने का अपराध सिद्ध हो रहा था, इसलिए उन्होंने कई झूठे गवाह पेश किए कि गवर्नर शराब पीकर मस्त था और हमारे सामने शराब की उलटी की थी और खुद ही अंगूठी उतार कर फेंक दी थी। इस तरह इन झुठी गवाहियों से अपराध तो प्रत्यक्ष में सिद्ध हो गया। गवर्नर को तलब कर लिया गया। शराब पीने की सज़ा दी गई और गवर्नरी से हटा दिया गया।

सईद बिन आस उनकी जगह गवर्नर बना दिए गए। नए गवर्नर ने वहां जाकर जो अशान्ति का वातावरण देखा, तो बहुत परेशान हुए। गुंडों और इस्लाम में विश्वास न रखने वाले लोगों ने एक हंगामा खड़ा कर रखा था। गवर्नर ने इन तमाम घटनाओं से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को अवगत कराया। उन्होंने इसे गंभीरता से न लिया और 'लोगों के साथ अधिक ध्यान देकर न्याय करो', यह आदेश दे दिया।

इधर कूफ़ा में अशान्ति फैली हुई थी, उधर बसरा की स्थिति इससे कुछ कम ख़राब न थी। इब्ने सौदा के एजेंट राज्य के पदाधिकारियों पर आरोप लगाते और रोड़े अटकाते। मिस्र की स्थिति भी सन्तोष जनक न थी। इब्ने सौदा प्रचारित करता कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फिर वापस आएंगे, यह कैसे हो सकता है कि मसीह तो वापस आएं और रसूलुल्लाह वापस न आएं। इसी तरह वह यह भी कहता कि हर नबी का 'वसी' (जिसे वसीयत की जाए अर्थात् वारिस, उत्तराधिकरी) गुज़रा है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने चूंकि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का हक़ छीन लिया है, इसलिए वह अपराधी हैं और उन्हें सज़ा मिलनी चाहिए। इन कार्रवाइयों में तीन वर्ष बीत गए।

इब्ने सौदा का ग्रुप बराबर बढ़ रहा था, विशेष रूप से मुहम्मद बिन अबूबक्र और मुहम्मद बिन हुज़ैफ़ा का विरोध ज़्यादा ज़ोर पकड़ रहा था, इसलिए कि दोनों का प्रभाव अपने-अपने क्षेत्रों में अधिक था। मुहम्मद बिन अबूबक्र हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे थे, मुहम्मद बिन अबू हुज़ैफ़ा मदीना को

रहनेवाला था और शहर में उसका प्रभाव अधिक था।

धीरे-धीरे इस अशान्ति और संघर्ष में चार साल बीत गए और विद्रोहियों और विरोधियों ने अपने प्रभाव-क्षेत्र बढ़ा लिए। बहुत कुछ सोच-विचार के बाद उन्होंने निश्चय किया कि खुलकर विद्रोह कर देना अब अधिक फलदायक होगा।

वलीद बिन उक़बा के उत्तराधिकारी सईद बिन आस अपने यहां श्रेष्ठ और सज्जन पुरुषों को ही आने-जाने देते, लेकिन कभी-कभी ऐसा अवसर भी आता कि कोई भी वहां आ जाए और सभा में शरीक हो जाए। एक दिन सभी बैठे हुए थे, बातें हो रही थीं कि इसी बीच तलहा के दान-पुण्य की चर्चा शुरू हो गई। सईद के मुंह से बिना कुछ सोचे-समझे यह बात निकल गई कि चूंकि तलहा के पास माल बहुत है, इसलिए वे दान-पुण्य आसनी से कर सकते हैं। अगर मेरे पास भी धन हो, तो मैं उनसे अधिक ही दान-पुण्य करूं। आगे बढ़ कर यह तक कह डाला कि अमुक जागीर गवर्नर को दे दी जाए, तो वह दान-पुण्य में तलहा से आगे बढ़ जाएं।

इतना कहना था कि विरोधियों में से एक व्यक्ति बोल उठा कि तुम मुसलमानों के माल को डकार जाना चाहते हो, यहां तक कि दो व्यक्ति क्रोधाग्नि में जल उठे और उस व्यक्ति को गवर्नर के सामने ही मारना शुरू कर दिया। जब उसके बाप ने झगड़ा मिटाना चाहा, तो उसे भी लहू-लुहान का दिया। गवर्नर ने बचाना चाहा, पर उनकी किसी ने न सुनी। झगड़ा सुना, तो विद्रोहियों ने अशान्ति पैदा करने के लिए एक और हरकत की, अर्थात् यह कि गवर्नर से माफ़ी मांगने लगे। भले और सज्जन गवर्नर ने साधारण झगड़ा समझ कर रफ़ा-दफ़ा कर दिया और यह कह कर टाल दिया कि कुछ लोग भावनाओं में आ गए थे, उन्हें समझा दिया गया है।

अब इन विद्रोहियों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और सईद की बुराइयां खुली मज्लिसों में बयान करनी शुरू कर दीं। भले लोगों को ये बातें बड़ी अप्रिय लगीं, उन्होंने गवर्नर के पास जाकर स्थिति से अवगत कराया और बताया कि ये लोग मुसलमानों में बिखराव पैदा करना चाहते हैं, गवर्नर होने की हैसियत से आपका कर्त्तव्य है कि इस स्थिति से निपटें और अपना दायित्व निभाएं, मगर यह रोग गवर्नर के वश से बाहर हो चुका था। उसने उन लोगों से कहा, आप

अमीरुल मोमिनीन से सीधे-सीधे बात कर लें और उन्हें इस ओर आकृष्ट करें।

इन लोगों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को सूचना भेजी, तो वहां से गवर्नर को आदेश मिला कि इन विद्रोहियों को देश निकाला देकर उन्हें अमीर मुआविया गवर्नर शाम के पास भेज दें। वह पूरा-पूरा प्रबन्ध कर लेंगे। दूसरी ओर अमीरुल मोमिनीन ने अमीर मुआविया को भी स्थिति से अवगत कराया और कहा कि हर प्रकार से नम्रता पूर्वक इनको सुधारने का यत्न करो, अगर ये सुधर जाएं, तो बेहतर, वरना इस दुष्टता का इन्हें दंड दिया जाए।

अमीरुल मोमिनीन ने जिन लोगों को देश-निकाला देने का आदेश गवर्नर के मश्विरे से दिया, उनकी संख्या लगभग दस थी। जब ये लोग शाम (सीरिया) पहुंचे, तो अमीर मुआविया ने पूरे आवभगत से उनका स्वागत किया, उनका दिल रखने की कोशिश की, दिल जीतने के लिए इंसानी वश में जो कुछ था, वह सब किया गया। अमीर मुआविया उनके साथ खाना खाते और समय निकाल कर उनके साथ उठते-बैठते।

एक दिन अमीर मुआविया ने उन लोगों को सम्बोधित किया, मैंने सुना है कि तुम लोगों को क़ुरैश से घृणा है, अल्लाह ने क़ुरैश के माध्यम से अरब को सम्मान दिया, तुम्हारे अधिकारी तुम्हारे लिए ढाल के रूप में हैं, ये क़ुरैश तुम्हारे लिए कष्ट सहते हैं और तुम्हारा बड़ा ध्यान रखते हैं। अगर आप लोग इसका आदर नहीं करेंगे तो संभव है अल्लाह तुम्हारे सरों पर दूसरों को लाद दे, जो तुम्हें अत्याचार का शिकार बनाएं और यह भी संभव है, इस संसार में तुम्हारे भाग्य में यातानाएं ही यातानाएं लिख उठें।

पर इस समझाने का उन पर कोई प्रभाव न पड़ा, वे बिगड़ गए, कहने लगे, 'भला हम क़ुरैश की क्या परवाह करते हैं, क़ुरैश को एक ओर रहने दो, वे संख्या में न पहले हमसे अधिक थे, न अब हैं, हमें उनकी परवाह नहीं।'

इस प्रकार यह बात स्पष्ट हो गई कि इन विद्रोहियों के इरादे ठीक नहीं हैं और उस सद्व्यवहार का जो अमीर मुआविया ने उनसे किया था, उन पर कोई प्रभाव न हुआ। उसी समय अमीर मुआविया ने बता दिया कि तुम लोग इस योग्य नहीं हो कि तुम्हारे साथ कोई सद् व्यवहार किया जाए। उन विद्रोहियों ने भी ख़ूब तेज़ी दिखाई और अमीर मुआविया को कहा कि तुमको चाहिए कि तुम अपने पद से मुक्त हो जाओ। अमीर मुआविया नम्रतापूर्वक और पूरे धैर्य के साथ उनकी बातें सुनते रहे, फिर बोले, तुम्हारे कहने से तो नहीं, इसलिए कि तुम्हारे दिलों में

कपट है, सच तो यह है कि यह सब कुछ तुम इस्लाम को तबाह करने के लिए कर रहे हो, तुम्हें इस्लाम का हित व कल्याण तो प्रिय है नहीं,, हां अगर अमीरुल मोमिनीन कहें या मुस्लिम समुदाय कहे, तो मैं अपना पद आज ही त्याग दूंगा।

झुंझलाहट में आकर उन लोगों ने अमीर मुआविया पर धावा बोल दिया, फिर भी अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें समझाते रहे, उन्होंने बताया, यह कूफ़ा नहीं शाम है, तुम लोग यहां से निकल जाओ तो बेहतर है। बाद में उन्होंने उन्हें शाम से निकाल दिया और अमीरुल मोमिनीन को लिख भेजा, इनकी नीयतें बुरी हैं, कूफ़ा वालों को लूटना चाहते हैं। आप इन लोगों की ओर ध्यान ही न दें।

दमिश्क़ से निकल कर इन लोगों को इतना साहस न हुआ कि फिर कूफ़ा की तरफ़ लौटें। उन्होंने कूफ़ा के बजाए जजीरा जाना पसन्द किया। जज़ीरा के गवर्नर अब्दुर्रहमान ख़ालिद बिन वलीद के सुपुत्र थे। वह अपने बाप की तरह बड़े बहादुर, निडर और सहासी व्यक्ति थे। अब्दुर्रहमान को जब पूरी बात मालूम हुई तो वह इनसे मिले और कहा, मैं तुम्हारे हालात जानता हूं, मैं उसका बेटा हूं जिसके पैर कभी डगमगाए नहीं थे, न वह कभी पीछे हटा। तुम जानते हो कि धर्म से विमुख होने वाले उपद्रव को उन्होंने ही समाप्त किया था। इसी तरह अगर तुम लोगों ने बिगाड़ पैदा किया और उपद्रव मचाया, तो मैं तुम्हें ऐसी सजा दूंगा, जिसे तुम सदैव याद रखोगे। अब्दुर्रहमान ने केवल इतना ही नहीं किया, बल्कि उनको नज़रबन्द कर दिया, जब कभी कहीं जाते तो इन सभों को पैदल ही घसीटते ले जाते।

समय बीतता गया। उपद्रव का कोई मौक़ा हाथ न लगा, आख़िर अब्दुर्रहमान को सन्तोष हो गया और वह समझने लगे कि इन लोगों ने तौबा कर ली है, इसलिए उनके सरदार को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की सेवा में भेजा कि वह मदीना पहुंच कर क्षमा चाहे और उन्हें विश्वास दिलाए कि अब भविष्य में ऐसा न करेंगे।

अमीरुल मोमिनीन ने उनसे पूछा कि अब वे कहां रहना चाहते हैं?

उन्होंने कहा कि हमें जज़ीरा में अब्दुर्रहमान के पास रहने की अनुमति दी जाए। इससे अनुमान यही कहता है कि मालिक और उसके साथी सच में लज्जित थे।

एक ओर इनका हाल यह था, दूसरी ओर इनका गुरू चुप न बैठा था। वह यथा संभव लोगों में घृणा, द्वेष-भाव और उपद्रव फैलाने का पूरा यत्न कर रहा

था।[1] उसने हर क्षेत्र में अपने एजेटं भेजे कि लोगों को अच्छी बातों का आदेश दिया करो, बुरी बातों से उन्हें रोको, उपदेश द्वारा जब उन पर अपना प्रभााव जमा लो, तो बड़े अच्छे ढंग से अपने विचारों को उनके सामने रखो। वह कहता, यह सावधानी अवश्य दिखाना कि शुरू में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के विरोध में कुछ न कहना, बल्कि उनके विद्रोहियों के विरुद्ध ही कहना और पदाधिकारियों के अन्याय व अत्याचारों को लोगों के सामने इस तरह बयान करना कि लोग यह समझें कि सच में यह जो कुछ हो रहा है, जनहित में हो रहा है और उसी के लिए कष्ट पर कष्ट सहन किए जा रहे हैं।

इब्ने सौदा बुद्धिमान तो था ही, उसे एक बात सूझी कि गवर्नरों को बदनाम करने के लिए दूसरे प्रान्तों में प्रचार किया जाए, अर्थात् यह कि कूफ़ा के गवर्नर को बदनाम करने के लिए शाम में प्रचार किया जाए और शाम के गवर्नर को दूसरे पड़ोसी प्रान्तों में रुसवा किया जाए। ऐसा करने में एक रहस्य यह था कि अगर किसी गवर्नर को उसके प्रान्त में आरोपित किया गया तो लोग तुरन्त कह उठेंगे कि यह दुष्प्रचार है, लेकिन अगर दूरस्थ क्षेत्रों में बदनाम किया जाए तो सही स्थिति मालूम करना कठिन होगी, इसलिए लोग मानने पर विवश होंगे। उसके एजेंट बड़े चतुराई से कहते कि "तुम्हारा गवर्नर तो बहुत अच्छा आदमी है मगर देखो, कूफ़ा के मुसलमान कितने भाग्यहीन हैं कि उनका गवर्नर बड़ा ही दुष्ट और अन्यायी है, उन पर हर प्रकार के अत्याचार कर रहा है।"

वे इस ढंग से हर गवर्नर को उसके क्षेत्र से बाहर बदनाम और रुसवा करने का हर संभव यत्न करते। इसके पीछे उनका उद्देश्य अमीरुल मोमिनीन को बदनाम करना था।

इस प्रकार उन्हें अपने उद्देश्य में सफलता मिलने लगी और हर ओर से मदीना में सहाबा किराम को बराबर पत्र मिलने लगे कि मुसलमानों पर गवर्नर अत्याचार की अति कर रहे हैं। लोग सोचने लगे कि सब प्रान्तों में अन्याय हो रहा है और मुसलमानों पर गवर्नर अत्याचार के पहाड़ तोड़ रहे हैं।

धीरे-धीरे ये पत्र रंग लाए और एक प्रतिनिधि मंडल अमीरुल मोमीनिन की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा कि बाहर मुसलमानों पर गवर्नरों के अत्याचार बढ़ रहे हैं। अमीरुल मोमिनीन ने उन्हें विश्वास दिलाया कि जो कुछ भी हो, वह मामलों के तह में जाकर समझने का यत्न करेंगे। साथ ही उन्होंने यह भी कहा

---

1. तबरी, लन्दन एडीशन, पृ० 2842

कि जो रिपोर्टें उन्हें सीधे-सीधे इन क्षेत्रों से मिलती हैं, उनमें किसी अत्याचार का उल्लेख नहीं होता। अन्त में मंत्रणा करने के बाद अमामा बिन ज़ैद को बसरा की तरफ़, मुहम्मद बिन मुस्लिम को कूफ़ा की तरफ़, अब्दुल्लाह बिन उमर को शाम की तरफ़ और अम्मार बिन यासिर को मिस्र की तरफ़ जांच के लिए भेजा और उन्हें कड़ा आदेश दिया गया कि वे निष्पक्ष जांच करें कि गवर्नर, पदाधिकारी और कर्मचारी प्रजा पर किस प्रकार का अत्याचार करते हैं और क्यों उनके अधिकारों का हनन करते हैं।

इन चार व्यक्तियों के अतिरिक्त कुछ लोगों को खुफ़िया तौर पर भी रवाना किया गया कि वे भी जांच-पड़ताल करके स्थिति से अवगत कराएं। इन सबने पूरा ध्यान देकर बड़े परिश्रम से जांच-पड़ताल की और रिपोर्ट दी कि मुसलमान हर जगह सुखी हैं, प्रसन्न हैं, उन्हें हर प्रकार की स्वतंत्रता प्राप्त है, उनके अधिकारियों का बिल्कुल हनन नहीं हो रहा है, अधिकारी गण न्याय से ही काम ले रहे हैं अलबत्ता मिस्र की रिपोर्ट में कुछ बातें ध्यान देने की बताई गई थीं। ऐसा देख कर ख़लीफ़ा ने एक सर्कुलर तमाम प्रान्तों में भेजा, वह यह कि–

'जबसे मैं ख़लीफ़ा हुआ हूं, भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना मेरी नीति रही है, मगर कुछ मदीना के रहने वालों से मुझे मालूम हुआ है कि पदाधिकारी लोगों को मारते और गालियां देते हैं, इसलिए मैं इस पत्र के माध्यम से एलान करता हूं कि जिस किसी को खुफ़िया तौर पर गाली दी गई हो या पीटा गया हो, वह हज के अवसर पर मक्के में मुझसे मिले और जो कुछ उस पर अत्याचार हुआ हो, चाहे मेरे हाथों से, चाहे पदाधिकारियों के हाथों से, उसका बदला मुझसे और मेरे पदाधिकारियों से ले या क्षमा कर दे। अल्लाह भले काम करने वालों को अपनी तरफ़ से बदला देता है।'[1]

जब यह पत्र प्रान्तों के अनेक नगरों में पढ़ा गया, तो लोग अमीरुल मोमिनीन की निष्ठा और सभ्यता से इतने प्रभावित हुए कि आंखों में आंसू आ गए। लोगों ने अमीरुल मोमिनीन की दीर्घायु की कामनाएं कीं और उन लोगों को धिक्कारा, जो इन बुराइयों को जन्म दे रहे थे।

फिर हज के अवसर पर ख़लीफ़ा ने तमाम गवर्नरों की एक क्रान्फ्रेंस की और उनसे मालूम किया कि लोगों में शिकायतों की चर्चा क्यों है। सबने एक

1. तबरी, लन्दन एडीशन, पृ० 2844

स्वर में कहा, उपद्रव तो उन लोगों का पैदा किया हुआ है, जिनका सरदार इब्ने सौदा है, गवर्नरों या कर्मचारियों का इसमें कोई हाथ नहीं है। हम सादर निवेदन करते हैं कि आप उन लोगों से, जो उपद्रव फैला रहे हैं, नम्रता से काम न लें, बल्कि आदेश दें कि हम कठोरता के साथ उनके उपद्रव को जड़-बुनियाद से उखाड़ फेंकें, नम्रता केवल उनसे बरती जाएगी जो इससे लाभ उठा कर संभल जाएं। बिगाड़ को कठोरतापूर्वक दबा देना नम्रता से बेहतर है।

आपने ये बातें सुनीं, पर इससे सहमत न थे, फ़रमाया, वे फ़ित्ने (बिगाड़) जिनकी ख़बर रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दे चुके हैं, अवश्य ही पैदा होंगे। मैं अवश्य ही एक हद तक उनको नम्रता से रोक दूंगा। मैं मुसलमानों से नम्रता ही से पेश आऊंगा, अलावा उन मामलों के जिनका ताल्लुक़ अल्लाह की हदों से हो। अल्लाह बेहतर जानता है सिवाए मुसलमानों की भलाई के, मेरे सामने और कोई चीज़ नहीं। मेरा तुम्हें आदेश है कि अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर मुसलमानों से और नम्र व्यवहार करो, उनके अधिकार उनको दो, उनकी ग़लतियों को क्षमा करो, हां, जो व्यक्ति शरीअत के विरुद्ध काम करे, उससे नम्रता का व्यवहार न करो।

आग फैलती गई

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु विरोधियों की दुष्टता की सूचना पाते, तो इस तरह की बातें ज़रूर फ़रमाते, कहते, वे बिगाड़ और उपद्रव, जिनकी ख़बर प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दे चुके हैं, अवश्य ही पैदा होंगे। मैं उनके दबाने का पूरा यत्न करूंगा, इस लिए कि अल्लाह की हदें कुचली जा रही हैं, पर कठोरता नहीं दिखाऊंगा। अल्लाह बेहतर जानता है कि मेरे दिल में अलावा मुसलमानों की भलाई के और कोई चीज़ नहीं है, इसलिए मैं तुम्हें आदेश देता हूं कि अपने-अपने क्षेत्रों में जाओ और मुसलमानों से नम्रता का व्यवहार करो, ग़लतियों को क्षमा करो, हां अगर कोई व्यक्ति ऐसा कार्य करे जो शरीअत के विरूद्ध हो, तो तुम ऐसे व्यक्ति के प्रति नर्मी बिल्कुल न दिखाओ।

इसके बाद अमीर मुआविया अमीरुल मोमिनीन के साथ मदीना गए। कुछ दिन ठहरे, फ़रमाया कि वह अकेले में कुछ बातें करना चाहते हैं। (इब्ने असीर, पृ० 515) अनुमति मिलने पर उन्होंने कहा, बिगाड़ हर दिन बढ़ रहा है, अशान्ति फैल रही है, मुझे भय लग रहा है, इसलिए मेरा निवेदन है कि आप मेरे साथ शाम चलें, जहां शान्ति है और किसी में साहस नहीं कि वह कुछ दुष्टई दिखा सके।

अमीरुल मोमिनीन की आंखों में आंसू आ गए, बोले, मेरी जान और मेरा जिस्म सब मुसलमानों के लिए है। अगर वे इसमें प्रसन्न हैं कि वे मुझे हानि पहुंचा कर प्रसन्न हों, तो मैं इस पर भी राज़ी हूं, मगर मुआविया! यह असंभव है कि मैं सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पड़ोस छोड़ दूं।'

अमीर मुआविया ने फिर कहा, तो इस स्थिति में मुझे अनुमति दीजिए कि शाम से एक भारी सेना आपकी सुरक्षा के लिए भेज दूं। अमीरुल मोमीनिन इससे भी सहमत न थे। फ़रमाया, नहीं, मैं अपनी जान की सुरक्षा के लिए बैतुल माल (सरकारी ख़ज़ाने) पर बोझ डालूं और एक ऐसी सेना मदीना में रखूं, जिसकी वजह से लोगों को कष्ट हो और सेना का उद्देश्य केवल मेरी रक्षा हो? मुझे मंज़ूर नहीं। अमीर मुआविया ने कहा, तो फिर वे लोग जो मदीना में आकर ठहर गए हैं और दंगाई हैं, उनको दूरस्थ देशों में भेज दूं? अमीरुल मोमिनीन ने इससे भी इंकार कर दिया और कहा, यह असम्भव है कि जिन लोगों को हमने जमा किया

था, मैं उन्हें भगा दूं और बिखर जाने दूं? अमीर मुआविया फूट-फूट कर रोने लगे और कहा, 'फिर तो खुले आम घोषित कर दीजिए कि अगर अमीरुल मोमिनीन की जान को किसी तरह की कोई क्षति हुई तो 'क़सास' (क्षति पूर्ति) का हक़ अमीर मुआविया को होगा, संभव है इससे लोग डर जाएं और दुष्टता न दिखाएं। अमीरुल मोमिनीन ने इससे भी इंकार कर दिया और कहा, मैं ख़ूब जानता हूं तुम्हारे स्वभाव में उग्रता है और मैं डरता हूं कि तुम मुसलमानों पर मेरे बाद कठोरता दिखाओगे। अमीर मुआविया बड़ी पेरशानी की हालत में यह कह कर चले गए कि संभव है अब मेरी आप से मुलाक़ात न हो।

इब्ने सौदा को ख़ूब मालूम था कि हज के अवसर पर गवर्नरों की कान्फ्रेंस हो रही है, तमाम गवर्नर और प्रतिष्ठित अधिकारी अपने क्षेत्रों से अनुपस्थित रहेंगे, इसलिए इस अवसर का फ़ायदा उठाने का उसने निश्चिय कर लिया, वह यह कि निश्चित दिन में हर जगह बचे पदाधिकारियों पर आक्रमण करके उनकी हत्या कर दी जाए और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के विरुद्ध विद्रोह का विधिवत् एलान कर दिया जाए, अभी विद्रोही अपनी योजना को पूरा भी न कर पाए थे कि बहुत से गवर्नर और पदाधिकारी वापस आ गए। दूसरी जगहों का षड़यंत्र सफल न हो सका, मगर कूफ़ा में जो दंगाइयों का गढ़ था, एक सभा हुई और यज़ीद बिन क़ैस ने मिंबर पर चढ़ कर कहा कि अब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़िलाफ़त से अलग कर देना चाहिए। वक़ाअ़ बिन उमर, जो इस छावनी के अधिकारी थे, अपने सिपाहियों के साथ सभा में आ पहुंचे और यज़ीद बिन क़ैस को गिरफ़्तार करना चाहा, तो वह कायर रोने लगा और कहा कि मेरे दिल में तो मुसलमानों की भलाई के सिवा और कुछ है नहीं, मैं तो मात्र अमीरुल मोमिनीन के ध्यान को इस ओर आकृष्ट करना चाहता हूं कि गवर्नर मुसलमानों पर सख़्ती करता है, इसलिए वापस बुला लिया जाए।

वक़ाअ़ ने इस अवसर पर ख़ूब डांटा-फटकारा और कहा, इसके लिए सभा की क्या आवश्यकता थी? अगर अमीरुल मोमीनिन के ध्यान को पत्र लिख कर भी इस ओर आकृष्ट कर लिया जाए तो वे अपने आप गवर्नर को बदल देंगे। प्रत्यक्ष में तो ये लोग चुप हो गए, मगर मन में इन लोगों ने निश्चय कर लिया कि अब अधिक तेज़ी के साथ अपने मिशन में सफलता प्राप्त करने का यत्न किया जाएगा।

यज़ीद बिन क़ैस ने जो इब्ने सौदा का दाहिना हाथ था, एक पत्र उन देश

से निकाले गए लोगों के नाम खुफ़िया तौर पर भेजा कि वे तुरन्त हम्स से कूफ़ा आ जाएं।

तबरी लिखता है कि दंगाई वे लोग थे जिन्हें इस्लाम और शरीअत से दूर का भी संबंध नहीं था, वे अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए दुष्टता कर रहे थे और जिन लागों को कोसा और सताया रहा था, वे वही लोग थे जो ज्ञानी भी थे और व्यावहारिक लोग भी थे, जिनकी नस-नस में इस्लाम की मुहब्बत भरी थी और वक़्त के ख़लीफ़ा तो, जिनके विरुद्ध इन दुष्टों ने एक तूफ़ान मचा रखा था, ऐसे व्यक्ति थे, जो पहले ईमान लाने वालों में से थे और रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दामाद थे।

जब यज़ीद बिन क़ैस का पत्र जज़ीरा पहुंचा तो एक व्यक्ति के अतिरिक्त किसी ने भी पसन्द नहीं किया और कहा, हम तो इस षड़यंत्र में हिस्सा लेने के नहीं, हम तो गवर्नर अब्दुर्रहमान को वचन दे चुके हैं कि आगे इन दंगाइयों की चाल में नहीं आएंगे। हमें हर प्रकार की सुख-सुविधा प्राप्त हो तो हम बेकार में अपनी जान जोखिम में क्यों डालें? मगर उश्तर ने इस ढंग से परी को शीशे में उतारा कि वे उसकी चाल में आ गए और उसके साथ चल पड़े। ये लोग मंज़िल पर मंज़िल तै करते हुए कूफ़ा जा पहुंचे।

गवर्नर को जब इस रहस्य का ज्ञान हुआ तो उनको पकड़ने के लिए आदमी रवाना किए, मगर दुर्भाग्य कि गवर्नर के आदमियों को ये दंगाई कहीं न मिले। छः दिन के बाद ये दुष्ट कूफ़ा पहुंचे तो एक आदमी मस्जिद के आंगन में ख़ूब चिल्ला-चिल्ला कर भाषण दे रहा था और लोगों को उभार रहा था कि गवर्नर एलानिया कहता है कि कूफ़ा की नारियों का सतीत्त्व नष्ट करूंगा, कूफ़ा की जायदादें क़ुरैश का माल हैं। लोगों को यह सुन कर जोश आ रहा था। एक आदमी ने कहा, क्या तुम चाहते हो कि ऐसी बातें गवर्नर के मुंह से सुनो। अगर तुममें स्वाभिमान है तो तुरन्त यज़ीद बिन क़ैस के साथ हो जाओ, ताकि मदीना पहुंच कर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से मांग की जाए कि वह सईद को पद-मुक्त कर किसी और को गवर्नर नियुक्त करें। सईद के नायब उमर जरीद ने भाषण देकर लोगों को समझाया कि ये सब झूठी बातें हैं, वास्तविकता है ही नहीं, पर ये लोग कब किसी की सुनते थे और बुद्धि में आने वाली बातों को कब गवारा कर सकते थे।

लोगों की एक भीड़ शहर के बाहर जमा हुई। गवर्नर स्वयं उन लोगों को

समझाने वहां पहुंचे और कहा कि इतनी बड़ी भीड़ का मदीना की ओर सफ़र करना सही नहीं है, हां, कुछ गिने-चुने आदमियों को ख़िलाफ़त-दरबार में भेज दो और मेरे अलग किए जाने की मांग करो, मगर उन्होंने एक की न सुनी। गवर्नर अमीरुल मोमिनीन को पूरी घटना से अवगत कराने के लिए अपने आप मदीना चले गए और अमीरुल मोमिनीन को सारी बात बता दी।

अमीरुल मोमिनीन ने मालूम किया कि लोग आप की जगह पर किसको गवर्नर बनाना पसन्द करते हैं। सईद ने खुल कर कहा, अबू मूसा अशअ़री को। अमीरुल मोमिनीन ने कहा, अल्लाह गवाह है मैं इन लोगों को कभी भी किसी शिकायत का मौक़ा न दूंगा और न कोई बहाना उनका बाक़ी रहने दूंगा, इसलिए मैं अबू मूसा अशअ़री को कूफ़ा का गवर्नर नियुक्त करता हूं।[1]

अबू मूसा अशअरी ने कूफ़ा में अपने पद का चार्ज लिया, फिर आपने एक वक्तव्य दिया, जिसका सार यह था कि विद्रोह, दंगा, लड़ाई-झगड़ा इस्लाम में किसी प्रकार भी सही नहीं है। मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि जो व्यक्ति उपद्रव करे, दंगा मचाए, लड़ाई-झगड़ा करे, उसकी निःसंकोच हत्या कर दो, इसलिए तुम्हें साफ़-साफ़ बता देना चाहता हूं कि विद्रोही और दंगाई की हत्या करने में मुझे कोई संकोच न होगा।

अबू मूसा अशअरी के गवर्नर नियुक्त होने पर चाहिए तो यह था कि सब उपद्रवी उपद्रव करने से रुक जाते, दुष्टता फैलाने से तौबा कर लेते और देश में सुख-शान्ति बहाल करने के लिए हर संभव यत्न करते, पर उन्होंने एक और चाल चली। वह यह कि विभिन्न देशों के लोग अपने-अपने देशों के प्रतिनिधि के रूप में मदीना पहुंचें, वहां एक सम्मेलन किया जाए और आगे क्या कार्य-प्रणाली हो, इस पर विचार किया जाए।

ये लोग मदीना पहुंचे तो अमीरुल मोमिनीन ने कुछ व्यक्तियों को उनके स्वागत के लिए नगर के बाहर भेजा और यह भी आदेश दिया कि उन लोगों के आने का उद्देश्य मालूम किया जाए। उन लोगों ने, जो स्वागत के लिए नियुक्त किए गए थे, बातों-बातों में उनके आने का उद्देश्य मालूम कर लिया। इन लोगों का उद्देश्य यह था कि वे हर प्रकार से हज़रत उस्मान को बदनाम करने की कोशिश करेंगे। मदीना से वापस जाने पर जनता को यक़ीन दिलाएंगे कि हमने सुधार का हर संभव प्रयत्न किया है, मगर अमीरुल मोमिनीन हठ धर्मी दिखा

---

1. इब्ने असीर

रहे हैं। हम एक बार बहुत सारे लोगों को साथ लेकर मदीना आकर अमीरुल मोमिनीन से मांग करेंगे कि वह ख़िलाफ़त से अलग हो जाएं। अगर उन्होने हमारी बात मान ली, तो बेहतर, वरना हम उनकी हत्या करने में भी संकोच न करेंगे। इन लोगों को स्वागत करने वालों ने सविस्तार बता दिया कि दो तीन आदमियों के अलावा मदीना में कोई भी उनके विचार का नहीं है और अगर वे ऐसा करेंगे तो बड़ी भारी भूल होगी।

लोग यह भयानक ख़बर सुन कर अमीरुल मामिनीन के पास पहुंचे और उन्हें स्थिति से भरपूर अवगत कराया। आप साक्षात दया थे, इन घटनाओं का उन पर कोई प्रभाव न पड़ा और कहा, उम्मार तो आक्रोश में हैं कि मैंने उसे क्यों चेतावनी दी, जब कि उसने अब्बास बिन उत्बा पर आक्रमण किया। मुहम्मद बिन अबू बक्र अभिमान के नाते मेरे विरुद्ध है, मगर मैं यह समझ नहीं पा रहा हूं कि मुहम्मद बिन हुज़ैफ़ा क्यों अपनी जान मुसीबत में डाल रहा है।

इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आम सभा की, उसमें तमाम सहाबा किराम एकत्र हुए। आपने उन लोगों को, जो स्वागत के लिए गए थे, कहा कि वे जो कुछ भी घटना है, साफ़-साफ़ सबके सामने बयान करें। जब लोगों को पक्की गवाही मिल चुकी और विद्रोह का भेद खुल गया, तो सबकी यही राय ठहरी कि इन विद्रोहियों का क़त्ल अनिवार्य है, इसलिए इन्हें क़त्ल कर देना चाहिए। अगर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु इन लोगों की बातों को व्यवहार में ले आते, तो इस्लाम में एक बहुत बड़े बिगाड़ की जड़ कट गई होती और इसकी भी संभावना थी कि जो सम्प्रदायवाद आज तक नए-नए अत्याचारों का पहाड़ तोड़ रहा है, वहीं समाप्त हो जाता। पर उन्होंने इसका ज़ोरदार विरोध किया और कहा कि एक बार फिर हम इनको क्षमा कर देंगे और हर प्रकार का यत्न करेंगे कि वे अपनी चालों से बाज़ आ जाएं और जब तक ये लोग शरीअत की सीमाओं को लाघेंगे नहीं, इन्हें सज़ा न दी जा सकेगी।

इसके बाद[1] अमीरुल मोमिनीन मिंबर पर चढ़े और फ़रमाया, आवश्यकता तो नहीं थी कि मैं अब लोगों के सामने अपने ऊपर लगाए गए झूठे आरोपों से अपने को मुक्त बताता, पर अगर मैं चुप रहा, तो ये लोग कहेंगे कि उस्मान ने इन आरोपों के उत्तर में अपना मुंह तक नहीं खोला, इसलिए मैं ज़रूरी समझता हूं कि राष्ट्र को आरोपों और उनके उत्तरों से सूचित करूं।

1. इब्ने असीर

पहला आरोप मुझ पर यह है कि मैंने सफ़र में पूरी नमाज़ अदा की, हालांकि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़र में नमाज़ क़स्र (संक्षिप्त) किया करते थे। इन लोगों का विचार है कि मैंने ऐसा करके जान-बूझ कर प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के विरुद्ध काम किया है। मैं आपको क़सम खाकर बताता हूं कि मैंने मिना में पूरी नमाज़ अदा की थी, इसका कारण यह था कि वहां मेरी जायदाद है और मेरी एक पत्नी वहां की रहने वाली हैं। मुझे यह पता न था कि मैं वहां कितने दिन ठहरूंगा। इसके अतिरिक्त हर ओर से लोग हज के लिए आए हुए थे, मुझे विचार हुआ कि लोग यह न समझ बैठें कि ख़लीफ़ा केवल दो रकूअत नमाज़ पढ़ता है, इसलिए मात्र दो रकूअत नमाज़ ही सही है।

दूसरा आरोप मुझ पर यह लगाया गया है कि मैंने कुछ ज़मीन ऊंटों की चरागाह के लिए वक़्फ़ कर दी है और इससे मेरा उद्देश्य यह है मेरे निजी ऊंट इसके चारों से पलें। इन लोगों का विचार है कि यह ज़मीन वक़्फ़ करके मैंने एक ऐसा कार्य किया है, जिसका उदाहरण नहीं मिलता। मैं आप लोगों को बताना आवश्यक समझता हूं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के काल में यह ज़मीन वक़्फ़ हुई थी। ख़िलाफ़त का पद संभालने से पहले मेरे पास असंख्य ऊंट थे, पर जिस दिन से मैं ख़लीफ़ा बना हूं, उस दिन से केवल दो ऊंट मेरी मिल्कियत में रह गए हैं और मेरे ऊंट कभी भी इस ज़मीन में नहीं चरे। मैंने यह ऊंट केवल हज के लिए खड़े कर रखे हैं।

तीसरा आरोप यह है कि मैंने युवकों को गवर्नर और अधिकारी बना दिया है। मेरा तरीक़ा यह रहा है कि मैंने केवल उन लोगों को प्रशासन का अधिकारी बनाया है, जिनमें योग्यता हो, संयम हो, न्याय करने की क्षमता हो और जो सज्जनता के पोषक हों, साथ ही नेक और भले व्यक्ति भी हों, मुझसे पहले के बुज़ुर्गों ने उम्र को कभी कसौटी नहीं बनाया। प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन लोगों को सेनापति बना दिया, जो नव युवक थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उदाहरण मेरे सामने था, इसलिए मैंने इसे कोई ऐसा कार्य न समझा, जो आपत्ति करने योग्य हो।

इस तरह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी पूरी बातें सबके सामने रख दीं और लोगों ने सच्चे मन से उनका समर्थन किया और कहा कि ये सब आरोप मूर्खतापूर्ण हैं, दुष्टता के कारण ऐसा हुआ है।

अमीरुल मोमिनीन की बातें सुनने के बाद आम लोगों का विचार यह था कि ऐसे तमाम दुष्टों की हत्या कर दी जानी चाहिए, पर अमीरुल मोमिनीन का क्षमा-भाव ऐसा न होने देता। सहाबा किराम और सामान्य जनता के दिल में यह बात बैठी हुई थी कि हज़रत उस्मान अपूर्व व्यक्ति हैं, पर विद्रोहियों और दंगाइयों के मन में यह बात बैठ गई थी कि यह दयाभाव ही तमाम बिगाड़ों की जड़ है, दुष्टों को सज़ा मिलनी चाहिए। दुष्ट यह समझते कि इस क्षमा-भाव का लाभ उठाकर अपनी चालों को तेज़ करना चाहिए, इसी लिए हर बार यही इरादा करते कि अबकी बार ऐसा मज़ा चखाएंगे कि वह तमाम क्षमा आदि भूल जाएंगे।

ये लोग षड़यंत्रानुसार सन् 36 हि0 में तीन टोली बन कर अपने-अपने घरों से योजना को व्यावहारिक रूप देने के लिए बाहर निकले। अब्दुल्लाह बिन सबा इस बार स्वयं मिस्र की टोली में सम्मिलित हुआ और बताया यह कि हज के लिए जा रहे हैं। मिस्र के गवर्नर ने इन लोगों के निश्चय की सूचना एक विशेष दूत भेज कर अमीरुल मोमिनीन को दे दी। अमीरुल मोमिनीन ने इस बार भी क्षमा और माफ़ी ही से काम लिया। द्रोही यह सोच कर चले थे कि अगर हम अपने षड़यंत्र में सफल हो गए तो बेहतर, वरना झूठे आंसू बहा कर अमीरुल मामिनीन की दया के पात्र बन जाएंगे। उनका यह भी विचार था कि अमीरुल मोमिनीन कभी भी यह पसन्द न करेंगे कि लड़ाई में मुसलमानों का ख़ून बहे, इसलिए उनके मुक़ाबले के लिए किसी फ़ौज का जमा करना या उनसे नियमित रूप से लड़ना लगभग असंभव था।

इन तीनों टोलियों ने मदीना के क़रीब पहुंच कर अलग-अलग जगहों पर डेरे लगाए। कूफ़ा वालों ने औस पर, बसरा वालों ने ज़ाख़शब पर और मिस्र वालों ने ज़ुल मर्रा पर अपने-अपने क़ाफ़िले जमा किए या फ़ौज जमा की। इन सबकी तायदाद लगभग तीन हज़ार थी। मदीने वालों को उसका हाल मालूम हो चुका था। उन्होंने सेना को दो भागों में बांटा, एक को शहर की रक्षा के लिए तैनात किया और दूसरा इस बात के लिए नियुक्त किया कि अगर मुक़ाबले की नौबत आ जाए तो इन द्रोहियों से जम कर लड़े।

इब्ने सौदा अति चतुर व्यक्ति था। वह जानता था, सरकार से यह विधिवत लड़ाई लगभग असंभव है, इसलिए मदीना वालों का मत जानने के लिए उसने जगह-जगह जासूस लगा दिए। ये जासूस अलग-अलग प्रभावी व्यक्तियों से मिले और पता लगा लिया कि मदीना वाले विद्रोहियों के कट्टर विरोधी हैं और

ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन की रक्षा और शान्ति के लिए वे अपनी जानें देने को तैयार हैं। उन्हें यह भी मालूम हो गया कि तीन-चार लोगों के अलावा किसी की सहानुभूति विद्रोहियों के प्रति नहीं है और यह कि अमीरुल मोनिनीन हज़रत उस्मान रजियल्लाहु अन्हु अत्यन्त लोकप्रिय व्यक्ति हैं। जब दाल किसी तरह गलती नज़र न आई, तो इब्ने सौदा ने अपने आदमी प्यारे नबी की बीवियों के पास भेजे कि 'हमारा उद्देश्य केवल इतना है कि अमीरुल मोमिनीन की सेवा में पहुंच कर यह निवेदन करें है कि हमें मदीना में आने की अनुमति दी जाए।[1]

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियां, प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत में अच्छा और बुरा परखने की आदी हो चुकी थीं, इसलिए उन्होंने दूत को साफ़ जवाब दिया कि हम सब की सब तुम्हारे इस कार्य को घटिया समझती हैं और तुम्हारे मदीना आने के उद्देश्य को भी ख़ूब समझती हैं। जब यहां से साफ़ जवाब मिला तो इन दंगाइयों ने और लोगों पर दवाब डालना चाहा, जिन्हें वे प्रमुख समझते थे। मगर भला वे कब इन बातों में आते। संयोग की बात कि इन तीनों टुकड़ियों में इस पर मतभेद था कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का जानशीं कौन हो? मिस्र वाले अब्दुल्लाह बिन सबा के नेतृत्व में इस बात के इच्छुक थे कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा बनाया जाए। कूफ़ा के लोग ज़ुबैर बिन अब्बास को बेहतर समझ रहे थे और बसरा के लोग तलहा के लिए संघर्ष करना अपने ईमान की पहली धारा समझते थे।

जब इन लोगों ने निराशा ही निराशा हर ओर देखी तो एक और चाल चले कि अपने कार्य पर लज्जित हो गए, दिखावे के आंसू बहाए और अमीरुल मामिनीन की सेवा में उपस्थित होकर मुसलमानों की भलाई का उन्हें विश्वास दिलाया और कहा कि हमारा निवेदन केवल यह है कि कुछ गवर्नरों को बदल दिया जाए। अमीरुल मोमिनीन तो साक्षात दया थे ही, तुरन्त तैयार हो गए और उनकी इच्छा के अनुसार मुहम्मद बिन अबूबक्र को मिस्र का गवर्नर नियुक्त कर दिया।

प्रत्यक्ष में तो ये लोग प्रसन्न थे कि उनकी मुराद पूरी हुई कि मुहम्मद बिन अबूबक्र मिस्र के गवर्नर नियुक्त हो गए हैं, पर अभी उनके दिलों में द्वेष-भाव, कपट और दुष्टता की आंधी चल रही थी, फिर भी मिस्र के लोग मिस्र की

---

1. तबरी, लन्दन एडीशन, पृ० 2807

ओर, कूफ़ा के लोग कूफ़ा की ओर और बसरा के लोग बसरा की ओर चले गए। जनता समझी अल्लाह की कृपा हुई और बिना ख़ून-ख़राबे के बात टल गई। तमाम लोग शान्पिूर्वक दैनिक काम-काज में लग गए।

अभी चैन के अधिक दिन न बीते थे कि इन्हीं विद्रोहियों की सेना अचानक मदीना में आ दाखिल हुई। उन्हों ने देखते-ही-देखते मस्जिदे नबवी और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर को घेर लिया और घोषणा कर दी कि कोई व्यक्ति अपने घर से बाहर न निकले, वरना क़त्ल कर दिया जाएगा। उन लोगों ने तमाम महत्वपूर्ण स्थानों और शहर के नाकों पर क़ब्ज़ा कर लिया। इसका तुरंत फल यह निकला कि मदीना वालों की शक्ति बिखर गई और वे प्रतीरक्षा का कोई उपाय न सोच सके। मुक़ाबले की दो शक्लें थीं। एक यह की नगर के अन्दर सेना जमा की जाए और इन विद्रोहियों का मुक़ाबला किया जाए। इसके लिए हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु तैयार न थे और वह यह न चाहते थे कि मुसलमानों का ख़ून मदीना की गलियो में बहे। दूसरी शक्ल यह थी कि मदीना से बाहर की कोई सेना आकर उनका मुक़ाबला करे। दूसरी शक्ल पर उन्होंने यों क़ाबू पा लिया था कि किसी व्यक्ति के बाहर निकलने की अनुमति न थी। तमाम रास्ते बन्द थे और उन दिनों जब कि ख़बर पहुंचाने का कोई और साधन न था, किसी बाहर की सेना का आकर इन ज़ालिमों से मुक़ाबला करना लगभग असंभव था।

मदीना के कुछ लोगों ने साहस करके एक मीटिंग की और इन विद्रोहियों के पास पहुंचे। उनकी दुष्टता पर दुख और रोष व्यक्त किया, पर वे ताक़त के नशे में थे, कब इनकी परवाह कर सकते थे। विद्रोहियों ने तलवार के बल पर उन लोगों को भगा दिया, धमकाया और कहा कि अगर मदीना वालों ने फिर ऐसी हरकत की, तो उनमें से एक-एक को मार दिया जाएगा।

इन विद्रोहियों ने ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के प्रशासन को समाप्त कर डाला। ये विद्रोही जो मन में आता, करते और जिसे चाहते सज़ा देते, हर ओर अशान्ति फैली हुई थी, अन्याय व अत्याचार की लहर चल रही थी। लोग अपनी जानों के डर से दिन-रात अपने घरों में किवाड़ बन्द किए बैठे रहते, जनता मुंह से एक शब्द भी न निकाल सकती थी, पर कुछ लोग जिन्हें अल्लाह ने ईमानी साहस और मज़बूत दिल दे रखा था, बहुत बिगड़े और खुले आम कहने लगे, हमें अपनी जानों का कोई डर नहीं, पर हम यह मालूम

करना चाहते हैं कि इस बिगाड़, अन्याय और अत्याचार का कारण क्या है। उन लोगों ने एक विचित्र प्रकार की घटना गढ़ कर बयान की कि हम लोग अपने घरों को वापस जा रहे थे कि हमें रास्ते में एक आदमी मिला जो सरकारी ऊंट पर सवार था, कभी वह सामने आ जाता और कभी छुप जाता, इस पर हमें सन्देह हुआ कि यह क्या मामला है? हमने उसकी तलाशी ली और उसके पास से एक पत्र मिला जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ का लिखा हुआ था। इस पत्र को पढ़कर हमें बड़ा आश्चर्य हुआ और हम मदीना लौट आए, ताकि हम असल भेद और उसका हाल मालूम कर सकें।

भले लोगों ने इन विद्रोहियों को बहुत समझाया कि यह तुम्हारे हीले और बहाने हैं और इनमें वास्तविकता तनिक भी नहीं। यह कैसे सम्भव हो सकता है कि बसरा,मिस्र और कूफ़ा के लोगों को एक ही समय में मालूम हो जाए कि एक पत्र पकड़ा गया है, हालांकि तुम्हारे रास्ते अलग-अलग हैं, फिर एक ही समय तुम सब इकट्ठे लौट आओ। इस आपत्ति का उत्तर वे नहीं दे सके, जिसकी नीयत साफ़ न हो उसके लिए यह समझाना, बुझाना क्या काम दे सकता है। वे माने नहीं और कहा, जो हो, सो हो हमें हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त पसंद नहीं है, इसलिए उनके हित में यही बात है कि वह ख़िलाफ़त से अलग हो जाएं।

अन्त में उन विद्रोहियों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से आमने-सामने बात-चीत की और अपने आरोपों को उनके सामने दोहराया और उनसे मांग की कि तुरन्त त्याग-पत्र दे दें। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे तर्क के साथ बात-चीत की और कहा कि इस्लामी शरीअत की दृष्टि से किसी मतभदे को दूर करने के दो ही तरीक़े हैं—

एक यह कि मुद्दई अपने दावे के समर्थन में गवाह लाए और अगर वह ऐसा न कर सके तो मुद्दआ अलैहि क़सम खाए, इसलिए तुम्हें चाहिए कि तुम अपने गवाह क़ौम के सामने पेश करो। अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते तो मैं उस एक अल्लाह की क़सम खाता हूं जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि यह तुम्हारा क़िस्सा अनर्गल है, जिसकी कोई वास्तविकता नहीं। न मैंने यह पत्र लिखा है, न मुझे इसके बारे में कोई ज्ञान है, पर इन विद्रोहियों पर ऐसी बातों का कब प्रभाव पड़ता। उन्होंने आएं-बाएं करके असल बात तो टाल दी, पर अपनी हठ पर जमे रहे कि अमीरुल मोमिनीन तुरन्त त्याग पत्र दें।

बात आगे बढ़ी तो इन जालिमों ने उस मस्जिद पर भी पथराव किया, जिसकी नींव हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रखी थी। उन्होंने कुछ सहाबा को जो वहाँ मौजूद थे, घायल करके मस्जिद से बाहर निकाल दिया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु बेहोश होकर गिर पड़े, कुछ निष्ठावान मित्र उन्हें उठा कर घर ले गए। उनमें से कुछ इस बात पर तैयार हो गए कि वे ऐसे ग़लत लोगों का अन्त कर देंगे और अगर इस उद्देश्य-प्राप्ति में उनकी जान भी चली जाए तो भी वे उससे डरेंगे नहीं। ऐसे कुछ लोग सर पर कफ़न बांध कर अपने घरों से निकल आए, पर जब अमीरुल मोमिनीन को मालूम हुआ तो आपने बड़ी कड़ाई से उनको रोका और कहा 'लड़ने की कदापि जरूरत नहीं', इसलिए लोग अपने-अपने घरों को वापस चले गए।

मदीना में केवल तीन-चार लोग ऐसे थे जो पत्यक्ष रूप से विद्रोहियों का साथ दे रहे थे और हर तरह की घटिया हरकतों से अपने नामों को कलंकित कर रहे थे। इनमें सबसे अधिक बदनाम मुहम्मद बिन अबूबक्र थे। यह हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के लड़के थे, लेकिन स्वभाव की दृष्टि से हठी और अल्हड़ थे। लोग उनके बाप के कारण उनका आदर करते थे, इसलिए उन्हें भ्रम हो गया था कि वह भी एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। दूसरा व्यक्ति मुहम्मद बिन हुज़ैफ़ा था। इसका बाप यमामा की लड़ाई में शहीद हुआ था। उसकी कम उम्री पर तरस खाकर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके पालन-पोषण का दायित्त्व अपने कंधे पर ले लिया था। जब यह बड़ा हुआ और हज़रत उस्मान ख़लीफ़ा बने तो उसने इच्छा व्यंक्त की कि उसे कोई प्रतिष्ठित पद दिया जाए, मगर हज़रत उस्मान उसकी क्षमता और योग्यता ख़ूब अच्छी तरह जानते थे, इस पर तैयार न हुए। मुहम्मद ने देश से बाहर जाने की अनुमति चाही जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने सहर्ष अनुमति दे दी। मिस्र पहुंच कर यह इब्ने सौदा के षड़यंत्र का शिकार हो गया और उसके साथ मदीना लौटा। तीसरे आदमी अम्मार बिन यासिर थे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें मिस्र के गवर्नर के मामले में जांच के लिए नियुक्त किया था। चूंकि यह इब्ने सौदा के शिष्य थे, स्वभाव के नम्र थे और राजनीति जानते न थे, इसलिए इब्ने सौदा ने बड़ी आसानी से इन पर डोरे डाल दिए थे।

बीस दिन तक इन विद्रोहियों ने डेरा डाले रखा और हर सम्भव यत्न किया कि अमीरुल मोमीनीन ख़िलाफ़त से अलग हो जाएं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु

अन्हु के हृदय में मुस्लिम समुदाय का हित व कल्याण छाया हुआ था, भला वह कब ऐसा कार्य कर सकते थे। वह कहते हैं कि जो क़मीज़ अल्लाह तआला ने मुझको पहनाई है, वह किस तरह मुट्ठी भर विद्रोहियों के कहने से उतार दूं, मैं किस तरह मुस्लिम समुदाय को बे-आसरा छोड़ दूं। मैं जानता हूं कि ये लोग जो आज बिगाड़ पैदा करने पर तुले हुए हैं और मेरे जीवन से उदासीन हैं, मेरे बाद इच्छा करेंगे कि मेरे जीवन का एक-एक दिन एक-एक साल से बदल जाए।

बीस दिन बीत जाने के बाद इन भाग्यहीनों को ध्यान आया, लम्बा खिंचने पर कोई सहायता बाहर से न आ जाए और उनका उद्देश्य पूरा न हो सके। इसलिए उन्होंने आपस में मश्विरा करके यह निर्णय किया कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर को घेर लिया जाए और खाने-पीने की कोई चीज़ अन्दर न जाने दी जाए। वे समझ रहे थे कि इस प्रकार के अनुचित दबाव डालने से अमीरुल मोमिनीन अपने पद से हट जाने पर तैयार हो जाएंगे, जबकि मदीना के लोग बुरी तरह इन अत्याचारियों के चुंगल में फंसे हुए थे। इन तीनों टुकड़ियों ने ग़ाफ़िक़ी को अपना सरदार मान लिया था और वह सही अर्थों में मदीने का शासक था। वही मस्जिदे नबवी में इमामत करता, जनता विवश थी, इस विवशता के नाते या तो घरों में लोग बन्द रहते, या उसके पीछे अपनी नमाज़ें अदा करते।

ग़ाफ़िक़ी के नायब उश्तुर और हकीम बिन जबला थे। ये दोनों ऐसे लोग थे जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के आदेश से इस आरोप में क़ैद कर लिए गए थे कि उनके अधिकारियों ने माल लूट लिए थे। जब तक इन विद्रोहियों और दंगाइयों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर का घेराव करने का फ़ैसला नहीं किया था, उस समय तक वे नम्रता का व्यवहार करते, मगर घेराव के बाद उनकी आंखें ही बदल गईं और वे लोगों से यों व्यवहार करते, मानो वे उनके शासक हैं।

बात यहां तक पहुंच गई कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर न खाना था और न पानी। आखिर तंग आकर उन्होंने कुछ सहाबा को सन्देश दिया कि इन लोगों ने हमारा पानी तक बन्द कर रखा है, इसलिए आवश्यक है कि हमारी सहायता के लिए आप लोग कुछ व्यवस्था करें।

फिर कुछ लोगों ने विद्रोहियों को समझाने की कोशिश की कि यह अति अनुचित और अपवित्र कार्य है। रूम और फ़ारस के लोग भी तो क़ैदियों को खाने-पीने से वंचित नहीं रखते, पर उन्होंने ऐसे लोगों को भी साफ़ जवाब दे दिया और कहा कि हम तुम्हारे कहने से अपने निर्णय को नहीं बदल सकते।

हां, उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बड़ा साहस दिखाते हुए एक ख़च्चर पर कुछ रसद और एक पानी की मशक भेजी और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ रवाना हुईं। जब उनके मकान के क़रीब पहुंचीं तो उन विद्रोहियों और दंगाइयों ने उनको रोका और कहा कि तुम किसी हाल में भी आगे नहीं जा सकतीं। उम्मे हबीबा ने उन लोगों को सतर्क बताना और समझाना चाहा और कहा कि मैं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां इसलिए जा रही हूं कि उनके यहां बनू उमैया के यतीमों (अनाथों) और विधवाओं की वसीयतें हैं और मैं डरती हूं कि इस उपद्रव में कहीं वे नष्ट न हो जाएं, पर इन अन्यायियों ने इसकी भी परवाह न की और कहा तो यह कहा कि तुम झूठ बोलती हो। कुछ मन चलों ने उनके ख़च्चर के पालान के रस्से काट डाले और क़रीब था कि वह गिरकर पांवों से रौंदी जाएं कि कुछ नेक लोगों ने उनको पहचान लिया और घर पहुंचा दिया।

जब पानी सर से ऊपर को बहने लगा तो भद्र पुरुषों ने हज के बहाने मदीना से बाहर जाने का निश्चय कर लिया। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा उम्मे हबीबा के साथ हुए व्यवहार से डरी हुई थीं कि उनके साथ भी वही व्यवहार न किया जाए। इन तामाम बातों को दृष्टि में रखकर वह भी हज के लिए तैयार हो गईं। उन्होंने इस विचार से कि शायद द्रोह में कुछ कमी आए, अपने भाई मुहम्मद बिन अबूबक्र को साथ ले जाना चाहा, मगर वह तो विद्रोहियों का सरदार था और हर वक़्त दंभ में होने की वजह से अकड़ा फिरता था, वह भला ऐसी बातों पर क्यों ध्यान देता। लोगों ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की सेवा में साग्रह निवेदन किया कि वह इस असामान्य समय को देखते हुए मदीना से बाहर न जाएं, मगर वह उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के व्यवहार से बहुत डर सी गई थीं, इसलिए उन्होंने विवशता दिखाई और स्वयं हज को चली गईं।

जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि कोई उपाय काम नहीं कर रहा है तो तमाम प्रांतीय गवर्नरों के नाम पत्र भेजा, जिसका सार यह था कि, 'हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद, बिना किसी इच्छा के मुझे ख़िलाफ़त के लिए चुना गया और मैं इन ख़लीफ़ों के पद-चिह्नों पर चल कर जनता की सेवा करता रहा। मैंने अपने कर्त्तव्यों के निभाने में कदापि कोई कोताही नहीं की और न ऐसी बात की कि नई हो,

लेकिन कुछ लोगों के दिलों में बदी का बीज बोया गया और वे दुष्टता पर उतर आए। उन लोगों ने मेरे विरुद्ध योजनाएं बनानी शुरू कर दीं और जब मैं इन बातों को नज़रंदाज़ करता गया तो इन्होंने विरोधियों की तरह मदीने पर आक्रमण कर दिया, अब अगर आप लोग कुछ कर सकें तो सहायता की व्यवस्था करें।'

मगर इन दंगाइयों के कारण ये पत्र किसी गवर्नर तक न पहुंच सके। अमीरुल मोमिनीन ने कुछ दिनों की प्रतीक्षा के बाद एक और पत्र 'समर्थकों के नाम भेजा जो उन दिनों मक्का मुअज़्ज़मा में हज के लिए जमा हुए थे और एक विशेष दूत द्वारा यह पत्र भेजा और उसे आदेश दिया कि भरे मज्मे में पढ़कर सुना दिया जाए—

'मैं आप लोगों का ध्यान अल्लाह की ओर आकृष्ट कराता हूं और उसके उपकारों को याद दिलाता हूं, इस समय कुछ लोग बिगाड़ पैदा करने और इस्लाम में फूट डालने की कोशिश में लगे हुए हैं। इन लोगों ने क़ुरआनी आयतों से बिल्कुल आंखे चुरा ली हैं। क़ुरआन में स्पष्ट शब्दों में है कि 'तुम सबके सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो।'

उन्होंने इस बात की परवाह नहीं की कि मैं अल्लाह के रसूल का नायब हूं और कोई क़ौम बिना किसी सरदार के उन्नति नहीं कर सकती। वे लोग पूरे मुस्लिम समुदाय को नष्ट करने पर तुले हुए हैं, इसके अतिरिक्त उनका कोई उद्देश्य नहीं। मैंने उनकी शिकायतें दूर करने का यत्न किया और गर्वनरों को बदलने का वायदा भी कर लिया था, पर वे अपनी दुष्टता से रुके नहीं।

ये लोग तीन बातों की मांग करते हैं—

एक यह कि जिन लोगों को मेरे समय में सज़ा मिली है, उन सबका मुझसे बदला लिया जाए,

अगर यह मंजूर न हो तो फिर ख़िलाफ़त से अलग हो जाऊं,

वरना ये लोग बाहर के सभी प्रान्तों में मेरे विरुद्ध लोगों से कहेंगे कि आप लोग मेरी न कोई बात मानें ओर न मेरे किसी आदेश का पालन करें।

आप लोग ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं कि मैं एक इंसान हूं और इंसान से ग़लती हो जाना बिल्कुल स्वाभाविक है। आख़िर मुझसे पहले के ख़लीफ़ों ने भी अपने निर्णयों में ग़लती की, मगर कभी किसी को साहस न हुआ कि उनको सज़ा दे।

ख़िलाफ़त-पद से हटाये जाने या हट जाने का प्रश्न ही सही नहीं है।

अल्लाह ने मेरे सुपुर्द यह सेवा की थी और जब तक मेरी जान में जान है, मैं मुसलमानों की सेवा जान लगा कर पूरी निष्ठा के साथ करता रहूंगा।

तीसरी बात यह है कि ये लोगों को मेरे विरुद्ध भड़काएंगे और उनसे कहेंगे कि वे मेरा पालन न करें और मेरे आदेशों को न मानें। इसका उत्तर यह है कि मैं अल्लाह की ओर से इसका ज़िम्मेदार नहीं हूं। अगर ये लोग शरीअत के विपरीत करना चाहते हैं, तो उनकी अपनी इच्छा है।'

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास को अमीरे हज नियुक्त करके मदीना रवाना फ़रमाया और उन्हें ताकीद की कि कोई ऐसी बात न होने पाए, जिससे विद्रोहियों को किसी शिकायत का मौक़ा मिले। अमीरुल मोमिनीन की ओर से कोई ऐसी बात भी न हुई थी जिससे विद्रोही उन पर आक्रमण कर सकते। वे दिन-रात इस बात की खोज में थे कि हज़रत उस्मान को शहीद करने का कोई अवसर मिल जाए, आख़िर उन्होंने यह उपाय निकाला कि रात के समय अमीरुल मोमिनीन के मकान पर पत्थर फेंका जाए। उनका विचार था कि जोश में आकर अमीरुल मोमिनीन की ओर से पत्थर का जवाब पत्थर से दिया जाएगा और वे लोगों को कह सकेंगे कि अमीरुल मोमिनीन के घर की ओर से हम लोगों की ओर पत्थर आए, इसलिए हमने अपनी रक्षा में उन पर आक्रमण किया। अमीरुल मोमिनीन ने बड़ी कड़ाई से अपने लोगों से ताकीद कर दी कि वे कमरों से बाहर न निकलें और दुष्टों की ओर तनिक ध्यान न दें। अन्त में एक दिन आपने तंग आकर उन लोगों को छत पर से सम्बोधित किया और कहा कि तुम्हें अल्लाह से डरना चाहिए। मैं तो तुम्हारे नज़दीक पापी हूं, पर दूसरे लोग जिन पर तुम पत्थर फेंकते हो, उनका क्या अपराध है? उन दुष्टों ने इंकार कर दिया कि हमें तो पत्थरों का ज्ञान तक नहीं है।

जनता में से कुछ लोग हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां चोरी-छिपे अन्न-जल पहुंचाते रहे। कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने यह निश्चय कर लिया था कि हम अमीरुल मोमिनीन का हर पहलू से बचाव करेंगे, भले ही जान से हाथ धोना पड़े। यही लोग थे जो मकान के भीतर की ओर से रक्षा करते थे। विद्रोहियों ने लकड़ियों के ढेर जमा किए और उनमे आग लगा दी कि मकान जल जाए, मगर अल्लह को यह मंज़ूर न था।

जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को इसका ज्ञान हुआ तो उन्होंने उन लोगों को जो आप की रक्षा कर रहे थे, सम्बोधित किया और कहा कि तुम सब

लोग मुझे अल्लाह के सुपुर्द करके यहां से चले जाओ, तुम ख़ामख़ाही अपनी जान जोखिम में न डालो। इन लोगों को मुझसे वैर है, किसी और से नहीं है। इसलिए जिस पर मेरा आज्ञापलन अनिवार्य है मैं उसे इस कर्त्तव्य से मुक्त करता हूं।[1]

मगर सहाबा और दूसरे लोगों ने इसे माना नहीं और साफ़ कह दिया कि यह असंभव है[2], और स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि हम आपकी रक्षा अन्तिम क्षणों तक करेंगे। ये मुटठी भर जां-निसार तलवारें सौंतकर बाहर निकले और कहा कि हम देखेंगे कि कौन अमीरुल मोमिनीन पर आक्रमण करता है। मगर इन विद्रोहियों ने उन पर आक्रमण कर दिया। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और मरवान बहुत बुरी तरह घायल हुए। मुग़ीरह बिन अख़नस लड़ाई में काम आए, कई और लोग बुरी तरह घायल हुए और मारे गए। आखिर मुट्ठी भर आदमी तीन चार हज़ार आदमियों का किस तरह मुक़ाबला कर सकते थे। रक्षा करते हुए बहुत से लोग मारे तो गए मगर उन्होंने दरवाज़े की रक्षा न छोड़ी।

प्रत्यक्ष में तो विद्रोहियों को पूरा क़ब्ज़ा मिल गया था। उन्होंने अमीरुल-मोमिनीन के पास आख़िरी बार फिर सन्देश भेजा कि वह ख़िलाफ़त से अलग हो जाएं, पर उन्होंने सहनशीलता दिखाते हुए इस सन्देश को ठुकरा दिया और कहा कि अल्लाह ने मुझ पर वह बोझ डाला था और कोई धमकी या शक्ति मुझे इस कर्त्तव्य के निभाने से रोक नहीं सकती। अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु, जो एक प्रतिष्ठित सहाबी थे, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दरवाज़े पर आकर खड़े हुए और विद्रोहियों को सम्बोधित करते हुए कहा–

मुसलमानो! तुम्हें मालूम नहीं है कि तुम क्या कर रहे हो। मैं तुमको कहता हूं कि तुम शान्ति भंग न करो। अगर आज तुमने तलवार अपने म्यान से निकाल ली है, तो याद रखो, वह फिर कभी म्यान में दाख़िल न होगी, तुम मुसलमानों में झगड़ा पैदा करने पर तुले हो और कहते हो कि तुम इस्लाम की सेवा कर रहे हो, मगर मैं तुम से उस एक ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि जो बिगाड़ तुम पैदा कर रहे हो, वह शताब्दियों तक न मिटेगा। सोचो, आज तुम पर शासन नम्रता के साथ किया जा रहा है, यह तुम्हारी अपनी सरकार है, मगर वह समय बहुत जल्द आने वाला है, जब तुम पर तलवार से शासन किया जाएगा।

इन लोगों पर ऐसी अच्छी बातों का प्रभाव कब पड़ने वाला था। हज़रत

1. तबरी पृ० 3002
2. तबरी पृ० 3003

अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु को व्यंग्य-वाण चलाते हुए कह दिया कि तुम यहूदी हो और मुसलमान बने हुए हो। इन लोगों को शायद यह याद न था कि इब्ने सौदा स्वयं यहूदी नस्ल से ताल्लुक़ रखता था, जो इस्लाम को मिटाने के लिए क़सम खाए बैठा था। अब्दुल्लाह बिल सलाम निराश होकर अपने घर चले गए।

विद्रोहियों ने महसूस किया कि दरवाज़े के रास्ते हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में प्रवेश कर पाना लगभग असंभव है, इसलिए उन्होंने तीन आदमियों को नियुक्त किया कि वे पड़ोस की दीवार से छलांग लगाकर अमीरुल मोमिनीन के घर में जा घुसें और उनका काम तमाम कर दें।

ये निर्दयी अमीरुल मोमिनीन के कमरे में बारी-बारी घुसे और वापस आ गए। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु उस समय बड़ी तन्मयता के साथ क़ुरआन की तिलावत कर रहे थे, क़ुरआन पढ़ते देख इन विद्रोहियों को भी हत्या का साहस न हुआ, जबकि इसी के लिए वे तैनात किए गए थे, हर एक उनमें से चिल्ला उठा, खुदा की क़सम! ऐसे व्यक्ति पर हाथ उठाना अन्याय और अत्याचार है। मगर 'योग्य बाप के अयोग्य और घटिया बेटे' मुहम्मद बिन अबूबक्र को, जिसके पहलू में दिल ही नहीं था, तनिक भी दया न आई, वह क्रोध से कांप रहा था, वह भागता हुआ अमीरुल मोमिनीन के कमरे में आया[1] और उन्हें दाढ़ी से पकड़कर घसीटा और चीख़ा, कमबख़्त, ज़ालिम! तू बर्बाद हो।

अमीरुल मोमिनीन ने शान्त-भाव से उत्तर दिया, मैं ज़ालिम नहीं हूं।

इस पर वह और भड़क उठा, गालियां बकने लगा, उलटी-सीधी बकवास करने लगा, अमीरुल मोमिनीन शान्त-भाव से बोले, ऐ मेरे भाई के बेटे! अगर आज तेरा प्रतिष्ठित बाप जीवित होता, तो वह मेरे साथ इस व्यवहार को कभी उचित न कह सकता था। मैं इस अनुचित व्यवहार के प्रति अल्लाह के दरबार में विरोध व्यक्त करता हूं।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के इन शब्दों ने उस विद्रोही पर गहरा प्रभाव डाला, वह अवाक् रह गया, कुछ करने का उसमें साहस न रहा, चुप-चाप खड़ा रहा। इसी बीच अनेक विद्रोही हाथों में तलवारें लिए कमरे में प्रवेश कर गए और सबने वयोवृद्ध अमीरुल मोमिनीन पर धावा बोल कर अपने पांवों तले रौंद डाला। उस समय अमीरुल मोमिनीन क़ुरआन-पाठ कर रहे थे।[2] इस स्थिति में

1. तबरी
2. आप उस समय सूरः अहद का पाठ कर रहे थे कि ये हत्यारे कमरे में प्रवेश कर गए।

उस सज्जन और नेक पुरुष ने इस तमाम पन्नों को इकट्ठा करके उनको सीने से लगाया। इसी बीच एक व्यक्ति ने एक लोहे की छड़ आपके सर पर इस ज़ोर से मारी कि ख़ून बह निकला और क़ुरआन की इस आयत पर गिरा जिसका अनुवाद है—

'अल्लाह अवश्य ही उनसे तेरा बदला लेगा और वह बहुत सुनने वाला और जानने वाला है।'[1]

सौदान नामी एक भाग्यहीन व्यक्ति नें आप पर तलवार का वार किया। अमीरुल मोमिनीन ने वार हाथ पर लिया और उनका हाथ कट गया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी उनकी जान बचाने के लिए उनके ऊपर लेट गईं, मगर इन दुष्टों ने उनका अनादर करते हुए घसीट कर अलग किया। उनकी बीवी की कई उंगलियां कट गईं। सुरक्षा कर्मियों ने भी बचाने की कोशिश की, लेकिन विद्रोहियों की संख्या के आगे एक भी न चली, केवल एक को वे मार सके। नतीजा यह निकला कि दंगाइयों ने अपनी तलवारें एक साथ अमीरुल मोमिनीन के जिस्म में घोंप दीं, केवल इतना ही नहीं किया, बल्कि बड़ी निर्दयता और क्रुरता के साथ उनका गला काटा कि कहीं वह जीवित तो नहीं हैं। जब ये नीच कर्म कर चुके तो उन्होंने अमीरुल मोमिनीन के पवित्र देह को अपने अपवित्र पांवों तले रौंदा, फिर सर काटने चले, औरतें आपसे लिपट गईं, सर तो न काटा जा सका, अलबत्ता उन्होंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी का नक़ाब फाड़ डाला और मारा-पीटा और घायल कर दिया। अभी यह सब कुछ हो ही रहा था कि किसी ने आवाज़ दी, 'बैतुलमाल' की तरफ़, तो वे लोभी तुरन्त बैतुलमाल की तरफ़ दौड़ पड़े। तीन रात और तीन दिन उन्होंने वह-वह अत्याचार किए और लूट-पाट मचाई कि उनका वर्णन असंभव है। उन्होंने सुरक्षा कर्मियों को भी मार डाला, उनकी लाशें कुत्तों को डाल दीं। इन दंगाइयों का रोष अभी समाप्त न हुआ था। उन्होंने अमीरुल मोमिनीन के जनाज़ें पर पत्थर फेंके और कई एक जनाज़े वालों को भी घायल कर दिया।

सारांश यह कि 18 ज़िल हिज्जा सन् 35 हि०, तदनुसार 17 जून सन् 656 ई० को बयासी साल की उम्र में, बारह साल तक ख़िलाफ़त का पद संभालते हुए यह पाक हस्ती अत्याचारियों के हाथों अपनी जान से हाथ धो बैठी। वह एक हस्ती थी, जिसका उदाहरण मुसलमानों में मिलना कठिन है, अल्लाह उनके दर्जों को बुलन्द करे। आमीन!

---

1. सूरः राद

एक आदर्श जीवन

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लामी राज्य के तीसरे ख़लीफ़ा थे। आपका वंश पांचवीं पीढ़ी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जा मिलता है। वह क़बीला बनू उमैया से थे, जो क़ुरैश का एक प्रतिष्ठिज क़बीला था।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उम्र में छः साल छोटे थे। आप बचपन से ही बड़े नेक थे। पढ़ना-लिखना आपने बचपन में नहीं, बल्कि बड़े होने पर सीखा। आप एक सफल व्यापारी थे, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के घनिष्ठ मित्रों में से थे। जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नबी बनाये जाने का एलान फ़रमाया, उस वक़्त हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र 34 साल थी। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सन्देश हज़रत अबूबक्र लेकर गए थे। एक दिन तलहा बिन उबैदुल्लाह और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन दोनों के सामने अपना सन्देश रखा, अपनी हैसियत बताई। इन दोनों ने बिना किसी झिझक के इस्लाम स्वीकार कर लिया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु उन दिनों शाम की यात्रा से वापस हुए थे। बात-बात में आपने कहा कि जब मैं वहाँ से वापस आ रहा था, तो रास्ते में एक दिन शाम ही को सो गया। मुझे किसी ने आवाज़ दी, उठो, मुहम्मद मदीना पहुंच चुके हैं।[1]

इस्लाम अपना लेने के बाद हज़रत उस्मान के चचा हाकिम ने, जो प्यारे नबी के कट्टर विरोधी थे, हज़रत उस्मान के हाथ-पांव रस्सी से बांध दिए, बहुत मारा-पीटा और कहा कि इस्लाम से अलग हो जाओ। लेकिन आपने साफ़ इन्कार कर दिया और कहा, अगर मेरी जान भी निकल जाए तो मैं इस्लाम से फिरने वाला नहीं। जब अबू लहब ने द्वेष-भाव के कारण अपने बेटे उत्बा से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुपुत्री हज़रत रुक़ैया को तलाक़ दिला दी तो उनका दूसरा निकाह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से हुआ। जब विरोधियों ने मुसलमानों को सताने और पीड़ा पहुंचाने में हद कर दी तो वे मदीना छोड़-छोड़ कर जाने लगे। अबूसीना एक जगह है, वहां जाकर शरण लिया तो उन जाने

1. तबक़ात इब्ने साद, भाग 3, पृ० 37

वालों में हज़रत उस्मान और उनकी पत्नी हज़रत रुक़ैया भी थीं। अबू सीना में आप कई साल रहे और जब वापस आए तो मक्का के बजाए सीधे मदीना तशरीफ़ ले आए।

मदीना में आपने इस्लाम की जो सेवा की, वह अति महान है। आपकी दानशीलता और सहनशीलता को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। मदीने में मीठे पानी का केवल एक कुंवां था, जब मुसलमान वहां पहुंचे, तो वह विरोधियों के क़ब्ज़े में था और वे मुसलमानों से पानी का मूल्य लिया करते थे। स्पष्ट है यह बड़ी परेशानी की बात थी, प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसका बड़ा एहसास था। यह हज़रत उस्मान ही थे कि जिन्होंने प्यारे नबी की प्रसन्नता और सामान्य लोगों के हित को दृष्टि में रखकर तीस हज़ार दिरहम में यह कुंवां ख़रीद लिया और उसे मुसलमानों के लिए वक़्फ़ कर दिया। जब मस्जिद नबवी के फैलाव का प्रश्न आया तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने पास की ज़मीन ख़रीद कर मस्जिद नबवी का निर्माण करा दिया। तबूक की लड़ाई में जब मूसलमानों की दशा दयनीय थी, तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने दस हज़ार दिरहम नक़द और एक हज़ार ऊंट मुसलमानों की सेवा में प्रस्तुत किए थे।

बद्र की लड़ाई के अवसर पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी पत्नी हज़रत रुक़ैया की बीमारी के कारण उनकी सेवा में लगे रहे, ऐसा उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अनुमति से किया था, वह लड़ाई में शरीक न हो सके, पर जब ग़नीमत का माल अर्थात् लड़ाई में मिला माल बांटा गया तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का हिस्सा भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने निकाला, मानो वह लड़ाई में सम्मिलित हुए हों। हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा के देहावसान के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उम्मे कुलसूम का विवाह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से कर दिया और जब उनका भी देहान्त हो गया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते, 'अगर मेरी कोई और बेटी होती तो मैं निश्चय ही उसका विवाह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से कर देता', इससे स्पष्ट होता है कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से कितना लगाव और प्रेम था।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के शासन काल में आपका बड़ा सम्मान होता था और आप उन कुछ लोगों में से थे जो 'मंत्रणा परिषद्' के सदस्य थे, यहां तक कि कोई भी, महत्त्वपूर्ण कार्य आपके

मश्विरे के बिना तै नहीं हो पाता था। जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के देहान्त का समय क़रीब आया, तो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने सबसे पहले अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से मश्विरा किया कि किसे ख़लीफ़ा होना चाहिए।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आपका बड़ा आदर करते और आपकी राय को सदैव बड़ा महत्त्व देते। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को उन पांच महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में से चुना था, जिन्हें ख़लीफ़ा चुना जा सकता था। सच तो यह है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु उन लोगों में से हैं जो दुनिया में केवल दूसरों की सेवा के लिए पैदा होते हैं।

ख़िलाफ़त पद के चुनाव के बाद उन्हें मालूम हुआ कि हज़रत तलहा उनके विरुद्ध हैं, तो आपने पूरी निष्ठा के साथ कहा कि वह अब भी त्याग पत्र देने को तैयार हैं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के अन्तिम दिनों में, जबकि विद्रोहियों ने उनके मकान को घेर लिया था और पूरा देश अशान्ति के चपेट में था, उस समय आप अपने कर्तव्यों से ग़ाफ़िल न थे। अपना कर्तव्य निभाते रहे। इसी दशा में हज का समय क़रीब आ गया। आपने अपनी छत पर खड़े होकर आवश्यक आदेश दिए और इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को अमीरे हज बनाया। जब ख़तरा हर ओर से फैल रहा था उस समय भी लोगों की भलाई और बेहतरी ही उनके दिल पर छाई हुई थी। ये घटनाएं इस बात का प्रमाण हैं कि आप बड़े दृढ़ निश्चयी भी थे।

सच तो यह है कि आपने हर संभव तरीक़े से मुसलमानों की सेवा की। प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में आपने अपनी जान और माल पेश किया। आपकी दानशीलता तो कहावत बनी हुई थी और इसी कारण आपका नाम उस्मान ग़नी मशहूर हो गया था। आप रिश्तेदारों, धनहीनों और दुखी जनों के लिए दौलत पानी की तरह बहा देते। ख़िलाफ़त-काल के अन्तिम दिनों में जब आप पर निराधार आरोप लगाये गए तो आपने सबके सामने एक ज़ोरदार भाषण दिया। आपने फ़रमाया–

'जब मुझे ख़लीफ़ा चुना गया तो मैं अरब में सबसे अधिक धनी व्यक्ति था। मेरे ऊंट-बकरियों की संख्या बतायी नहीं जा सकती थी, आज अलावा दो ऊंटों के जो हज के लिए पाल रखे हैं, मेरे पास कुछ भी नहीं। कहा जाता है कि मैंने माले ग़नीमत (लड़ाइयों में मिला माल) में से इब्ने अबी जर्राह को बड़ा धन

दिया है, हालांकि मैंने, वचन के अनुसार केवल पचीसवां हिस्सा देने का वायदा किया था, यह उतनी ही रक़म है जो हज़रत अबूबक्र और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु दिया करते थे। मैंने उनको वचन दिया था कि अगर वह पश्चिमी तराबलत पर विजय प्राप्त कर लें, तो उन्हें माले ग़नीमत का पचीसवां भाग दिया जाएगा, पर जब लोगों ने इस पर आपत्ति की तो यह रक़म नहीं दी गई।

साथ ही यह कहा जाता है कि मैं अपने नातेदारों से बड़ी मुहब्बत करता हूं, पर ख़ुदा गवाह है कि मैंने कभी उन्हें अनुमति नहीं दी कि वे दूसरों के हक़ हड़प लें। वे अपने कर्त्तव्य उसी प्रकार निभाते रहे जैसे दूसरे मुसलमान निभाते। यह सच है कि मैं उनसे बहुत मुरव्वत करता हूं और उनको बहुत ज़्यादा धन-दौलत देता हूं, पर वह रुपया और धन-दौलत मेरा निजी है। बैतुलमाल से किसी व्यक्ति को बिना जायज़ हक़ के मैं एक फूटी कौड़ी भी नहीं देता। इसे मैं गुनाह समझता हूं। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में भी मैं अपना माल अपने रिश्तेदारों को दिया करता था। मैं अपनी जवानी के वक़्त भी जब मुझे रुपए की ज़रूरत थी, अपार धन अपने अज़ीज़ों और रिश्तेदारों पर ख़र्च करता था। अल्लाह गवाह है कि मैंने टैक्स लगाने में किसी की रू-रियायत नहीं की, जो कुछ मैंने लोगों से टैक्स के ज़रिए वसूल किए, वह सब उन्ही लोगों की भलाई में ख़र्च कर दिए। मैंने ख़ज़ाने से कभी एक कौड़ी भी अपने लिए मुनासिब नहीं समझा और मैं अपने ख़र्चे निजी आमदनी से पूरा करता हूं।'[1]

लोगों ने भरपूर ताईद की और कहा, बेशक अमीरुल मोमिनीन करोड़पति थे और उन्होंने अपना सब धन-दौलत मुसलमानों की बेहतरी और भलाई पर ख़र्च कर डाला है।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़त-काल में क़ानून-क़ायदे में तनिक भर भी अन्तर नहीं हुआ, वही क़ानून, वही ज़ाबता जो हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने जारी किए थे, पूरी पाबन्दी के साथ हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़त-काल में भी जारी रहे। उन्होंने अपने अधिकारों में तनिक भर भी वृद्धि नहीं की और लोगों के अधिकारों में तनिक भर भी अन्तर न आने दिया। तमाम मामले मज्लिसे शूरा (मंत्रणा

1. तबरी

परिषद) में जाते थे, जैसा उसका निर्णय होता, किया जाता, पूरे सप्ताह वे तमाम ख़बरें जमा करते रहते थे और जुमा के दिन वह सब कुछ आप मुसलमानों के सामने पेश कर देते। जनता को कहा हुआ था कि जब कभी और जिस समय चाहें, अमीरुल मोमिनीन से मुलाक़ात करके प्रतिष्ठावान गवर्नर की शिकायत उनके कानों में डाल दें। बड़े से बड़े और प्रतिष्ठित अधिकारी के ख़िलाफ़ शिकायत भी सुनी जाती और ग़रीब की बात भी सुनी जाती। हर ओर ख़ुशहाली थी। असंख्य पुल, सड़कें, मुसाफ़िरख़ाने, मस्जिदें और अतिथिगृह बनवाए गए थे, सैनिक छावनियों की बुनियाद डाली गई और सड़कों पर यात्रियों की सुविधा के लिए सभी संभव साधन जुटाए गए। मदीना के पास-पड़ोस में बाढ़ का पानी रोकने के लिए बहुत भारी बांध बनाया गया। मस्जिदे नबवी को बड़ा करके पत्थर से बनाया गया।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का स्वभाव बचपन ही से बहुत सादा था किसी प्रकार की कोई कृत्रिमता नहीं थी, चरित्र सुन्दर और आचरण श्रेष्ठ था, इस्लाम लाने से वह और भी चमक उठा। वह बहुत नेक और सहनशीलता के पहाड़ थे। बड़े दयावान और उदार हृदयी थे, उनका उदाहरण साफ़ सुथरे चश्मे का था जो मित्र-शत्रु सबको समान रूप से मीठा पानी देता है। जब मुसलमानों में समृद्धि आ गई, तब भी आपकी उदारता, दानशीलता और निश्चय और हौसले में कोई परिवर्तन न हुआ। उन्होंने लाखों नहीं, करोड़ों रुपए उदारता दिखाते हुए क़ौमी कामों में ख़र्च कर डाले। वह सच में, उन लोगों मे से थे कि दाएं हाथ से लाखों की ख़ैरात करते और बाएं हाथ को ख़बर न होती। वह इस जीवन को सही अर्थों में नश्वर समझते थे। वह रुपए-पैसे को कोई महत्त्व ही न देते, कौड़ी के मोल समझते।

वह प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पद चिह्नों पर चलना जीवन का मूल उद्देश्य समझते, लज्जा, सहनशीलता, ईमानदारी, दानशीलता और सत्यप्रियता आपका स्वभाव बन गई थी।

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपका विशेष आदर करते। एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सभा में बैठे थे। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे सहाबा मौजूद थे। आपके घुटने पर से कपड़ा सरक गया, आपने महसूस न किया। इसी बीच हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु

अन्हु तशरीफ़ लाए तो आपने तुरन्त अपने घुटनों को कपड़े से ढांप लिया।

ख़लीफ़ा होने की हैसियत से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पांचों नमाज़ों की इमामत खुद करते थे और आख़िर उम्र तक आपका यही तरीक़ा रहा। जब वह तहज्जुद की नमाज़ के लिए भोर में उठते, तो उनका पूरा यत्न होता था कि किसी और को कष्ट न दें, यहां तक कि पानी आदि के लिए वह ग़ुलाम को भी न उठाते। धनवान होने के बावजूद पूरी उम्र सादा भोजन और सादा कपड़ों में बसर कर डाली। वह यह भी पसन्द न करते कि उनकी पत्नी मूल्यवान वस्त्रों का प्रयोग करें। इस महान व्यक्ति ने मुसलमानों की भलाई के लिए अपनी जान तक क़ुरबान कर दी। इतिहास में आप का धैर्य और सहनशीलता को मुख्य रूप से स्वार्णीम अक्षरों में लिखा जाता रहेगा।

सदैव याद किए जाएंगे

इसमें सन्देह नहीं है कि आपका आदर्श जीवन ही हम सब के लिए अविस्मरणीय है, साथ ही आपके कारनामे भी इतने महत्त्वपूर्ण और अमूल्य हैं कि आपका नाम इतिहास में स्वर्णिय अक्षरों में लिखा जाता रहेगा। कुछ कारनामे तो ऐसे हैं जो इतिहास का अंग बन गए हैं, उनका जानना अनिवार्य है, उनमें से कुछ नीचे दिए जाते हैं--

काबा का विस्तार

यह बात अति प्रसिद्ध है कि सन् 26 हि0 में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हरमे काबा के विस्तार का आदेश दिया। दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के काल में भी इस तरह का कुछ कार्य हुआ था, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस कार्य को और आगे बढ़ाया। ज़मीनें ख़रीदी गईं और काबे में विस्तार का काम शुरू कर दिया गया, ताकि मुसलमानों की संख्या बढ़ जाने से जो तंगी आ गयी थी, उसे दूर किया जा सके।

मस्जिदे नबवी का निर्माण

इसी तरह मस्जिदे नबवी को बड़ा करने और बेहतर बनाने की योजना भी बनाई गई।

हज़रत नाफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से मालूम होता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में मदीने में जिस मस्जिद का निर्माण हुआ था, वह मस्जिद कच्ची ईंटों की बनी थी, और उसकी छत खजूर की टहनियों की थी और उसका स्तून खजूर के तने का था उसमें हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कोई बृद्धि नहीं की थी, हां, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ परिवर्तन किया, यहां तक कि उसके स्तंभों को लकड़ी के स्तंभों से बदल दिया। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसमें बहुत कुछ किया। आपने दीवार को नक़्श व निगार वाले पत्थरों और गछ से बनवा दिया, स्तंभ नक़्शेदार पत्थर के बन गए और उसकी छत साल की लकड़ी की हो गई।[1]

1. बुख़ारी, अबू दाऊद

क़ुरआन जमा करना

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से स्पष्ट है कि एक दिन हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उस्मान के पास पहुंचे। उन्होंने राज्य के विस्तार से पैदा होने वाली स्थिति का उल्लेख किया और बताया कि अलग-अलग क्षेत्र के निवासियों की भाषा और बोली का प्रभाव क़ुरआन के पढ़ने पर पड़ रहा है। क़ुरआन पाक में मतभेद का पाया जाना कोई अच्छी बात नहीं है, इसका हल अभी निकाल लिया जाए तो अच्छा है, वरना बाद में परेशानी होगी, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने तत्काल हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा को कहला भेजा कि उनके पास जो रखा हुआ ग्रंथ है, वह मेरे पास भेज दें, हम उसकी कई प्रतियां बना कर उसे वापस कर देंगे। हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वह प्रामाणिक प्रति भेज दी, जो उनके पास थी। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु, अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, सईद बिन आस, अब्दुर्रहमान बिन हारिस बिन हिशाम को हुक्म दिया तो उन लोगों ने उनकी प्रतियां तैयार कीं। प्रतियां जब तैयार हो गईं तो हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को उनकी प्रति वापस कर दी गई और नक़ल की गई प्रतियां दूसरे क्षेत्रों को भेज दी गईं और आदेश दे दिया गया कि इस प्रामाणिक प्रति के अलावा जो भी प्रति मिले उन्हें जला दिया जाए।

अल्लाह की हदें जारी की गईं

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह की हदें जारी करने में कभी कोताही नहीं की। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई वलीद से एक ग़लती हो गई जिसकी उनको सज़ा मिलनी थी। न जाने लोगों को क्यों सन्देह हो गया कि शायद सज़ा न दी जाए या हल्की सज़ा दी जाए। लोगों का यह सन्देश आप तक पहुंचा भी, आपने कहा, नहीं ऐसा नहीं हो सकता। अपराधी कोई भी हो, उसका अपराध सिद्ध होने पर उसे दंड तो मिलना ही चाहिए, चुंनाचे वलीद को सज़ा दी गई और अपराध के अनुसार ही सज़ा दी गई।

दामाद को हटा दिया

हर्स बिन हकम हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का चचेरा भाई और दामाद था। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसको कई दायित्त्व दे रखे थे, लेकिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को जब मालूम हुआ कि वह अपना दायित्त्व सही ढंग से नहीं निभा रहा है, तो आप उस पर बहुत नाराज़ हुए और उसे तुरन्त हटा दिया। नातेदारी को भी आड़े न आने दिया।

उदारता और दानशीलता

अमीरुल मोमिनीन के स्वभाव में हठधर्मी नाम की कोई चीज़ न थी, न ही अक्खड़पन मौजूद था। अहं और गर्व तो छू भी नहीं गया था। सत्ता में बने रहने की कोई इच्छा भी नहीं थीं।

उनके स्वभाव में नम्रता थी, ईमान की दृढ़ता थी, सद्बुद्धि थी, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों पर पूर्ण विश्वास था।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का व्यवहार क़ुरआन पर आधारित था, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर अमल करते थे और एक इस्लामी शासक के जो गुण होने चाहिए थे, वे सब आपमें मौजूद थे।

हज़रत उस्मान महान दानी थे। उनका धन, नातेदारों, दीन दुखियों, यतीमों, विधवाओं और निर्धनों के लिए वक़्फ़ था। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम में प्रवेश करते ही अपने ख़ज़ाने का मुंह खोल दिया था, मानो दानशीलता में बाढ़ आ गई हो। सच तो यह है कि हज़रत उस्मान अपने रब के दरबार में इस हाल में जाना चाहते थे कि अपना सब धन लुटा चुके हों, और सत्कार्यों का एक ख़ज़ाना लिए वहां खड़े हों। धन्य हैं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु, हम सबके लिए अनुकरणीय।

इस्लामी अक़ीदे और उसूल और इनकी बुनियाद पर ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े इस क़िस्म के हैं कि इन पर अमल करने वाला एक इंसान, इंसाफ़ पसन्द हुक्मरां (न्यायप्रिय शासक) और ख़ुदा का एक मिसाली बन्दा बन जाता है। इस्लामी दौर के चारों ख़लीफ़ा की ज़िन्दगियां तो इनकी ज़िन्दा मिसाल हैं। इसी पहलू से हम इन्हें याद रखते हैं और मिसाल समझ कर इनकी तक़लीद और पैरवी करना ज़रूरी समझते हैं। इसी ग़रज़ से हम इन चारों ख़लीफ़ा की ज़िन्दगियों को पेश कर रहे हैं ताकि इन्हें नमूना बना कर हम अपनी ज़िन्दगियां को बना-संवार सकें।

आपके हाथों में जो किताब है यह इस्लाम के तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान की ज़िन्दगी के बारे में है जो हर पहलू से हमारे लिए मिसाल है और अपनी ज़िन्दगी को बनाने संवारने के लिए जिनकी तक़लीद और पैरवी ज़रूरी है।

इस किताब में हज़रत उस्मान की ज़िन्दगी के हालात आसान ज़बान में बयान किए गए हैं। आप कपड़े की तिजारत करते थे। जब आप ख़लीफ़ा बने तो अरब में सबसे अमीर थे, अपनी दौलत आप ग़रीबों, रिश्तेदारों दीन दुखियों, यतीमों और विधवाओं पर पानी की तरह बहा देते थे। आपकी इसी दानशीलता की वजह से आपका नाम उस्मान ग़नी मशहूर हो गया था। आपकी ख़िलाफ़त के दौर में हर तरफ़ खुशहाली थी। आपने बहुत से पुल, सड़कें, मुसाफ़िर ख़ाने, मस्जिदें बनवाईं, और मस्जिदे नबवी को बड़ा करके पत्थरों से बनवाया। आपने दौलत को कभी कोई अहमियत नहीं दी, अमीर होने के बावजूद पूरी उम्र सादा खाना और सादा कपड़ों में बसर की और मुसलमानों की भलाई के लिए अपनी जान तक क़ुर्बान कर दी। खिलाफ़त के दौर का इल्म हासिल करने के लिए यह किताब बेहद मददगार है।

ISBN 81-7101-507-7 www.idara.co
9 788171 015078 ₹ 30000